सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-30 अंक-21 7 नवबर, 2015 मुख्य संपादक कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती कुल पृष्ठ 8 मूल्य : 2 रुपये

महान नवम्बर क्रान्ति जिन्दाबाद

''मार्क्स ने कहा था कि क्रान्तियाँ इतिहास की इंजन होती हैं। क्रान्तियाँ उत्पीड़ितों और शोषितों के उत्सव होती हैं। जनसाधारण और किसी भी समय इतने सक्रिय रूप से एक नयी समाज-व्यवस्था के रचयिताओं के रूप में सामने आने की स्थिति में नहीं होते जितना कि क्रान्ति के समय। ऐसे मौकों पर, यदि क्रमिक विकास के संकुचित और कूपमण्डूक पैमाने से नापा जाए तो जनता चमत्कार कर सकती है, परन्तु ऐसे मौकों पर क्रान्तिकारी पार्टियों के नेताओं को भी अपने उद्देश्य अधिक विशद तथा साहसपूर्ण बनाने चाहिएं ताकि उनके नारे जनसाधारण की क्रान्तिकारी पहलकदमी से आगे न रहें, वे प्रकाश स्तम्भ का काम करें, हमारे जनवादी तथा समाजवादी आदर्श को पूरी विशालता व भव्यता के साथ उनके सामने प्रस्तुत करें और उन्हें दिखायें कि पूर्ण, परम तथा निर्णायक विजय के लिए सबसे छोटा तथा सबसे सीधा रास्ता कौन सा है।'' – लेनिन

(जनवादी क्रान्ति के सामाजिक जनवाद की दो कार्यनीतियाँ)

बिजली दरों में वृद्धि व बिजली सेवा के निजीकरण के खिलाफ
वाम दलों ने किया रोष प्रदर्शन

पंचकुला : बिजली दरों में वृद्धि और बिजली सेवा के निजीकरण के खिलाफ सड़कों पर उतरे चार वाम दलों के कार्यकर्ता

पंचकुला : हरियाणा बीजेपी सरकार द्वारा बिजली दरों में बेतहाशा वृद्धि और बिजली सेवा के निजीकरण के खिलाफ चार वाम दलों–एसयूसीआई(कम्युनिस्ट), सीपीआई(एम), सीपीआई व सीपीआई(एमएल)–के संयुक्त तत्वावधान में यहां शक्ति भवन पर रोष प्रदर्शन किया गया। राज्य भर से आए चारों वाम दलों के हजारों कार्यकर्ता यवनिका पार्क में इकट्ठा हुए और सभा की।

वक्ताओं में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के राज्य सचिव कॉमरेड सत्यवान व राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड राजेन्द्र सिंह, सीपीआई(एम) के राज्य सचिव कॉमरेड सुरेन्द्र सिंह, सीपीआई के राज्य सचिव कॉमरेड दरियाव सिंह व सीपीआई(एमएल) के राज्य सचिव कॉमरेड प्रेम सिंह शामिल थे। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई(कम्युनिस्ट)

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सिर्फ मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन की महान वैज्ञानिक विचारधारा ही दिखा सकती है मुक्ति का रास्ता

– कॉमरेड प्रभाष घोष

(गतांक से आगे)

क्या धार्मिक चिंतन आज मदद कर सकता है?

आपको पता होना चाहिए कि यह विचार सरासर गलत है कि धार्मिक चिंतन मानव सभ्यता में शुरू से ही विद्यमान था। इतिहास में ऐसा कोई प्रमाण नहीं है। आज भी अफ्रीका में रहने वाले आदिवासी कबीले और अण्डमान के जेरौआ नहीं जानते कि भगवान क्या है। वे किसी देवता को नहीं पूजते हैं। आदिम समाज में, कोई स्थाई सम्पत्ति नहीं थी, सम्पत्ति के मालिकाने की कोई धारणा नहीं थी, अमीर और गरीब में कोई विभाजन नहीं था। शोषक और शोषित में भी कोई विभाजन नहीं था। उस समय, मनुष्य जैसे-तैसे जिन्दा रहने के लिए प्रकृति से संघर्ष करता था। विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों को काबू करने या नियंत्रित करने के लिए वह उन्हें राजी करने के विभिन्न तरीके अपनाता था। शक्तियों को प्रसन्न करने के विश्वास के साथ ये तरीके प्राचीन जादू-मंत्र यानी तंत्र-मंत्र के रूप में जाने जाते है। लेकिन उनमें किसी अलौकिक शक्ति का विचार या भगवान की कोई धारणा नहीं थी। उनका चिंतन भौतिकवादी था। विवेकानंद जिनका आस्तिकों के साथ-साथ हमारे जैसे नास्तिक भी आदर करते हैं, उन्होंने भी इस बात को माना था। उनके शब्दों में, ''*पहली प्रणाली थी, बाह्य प्रकृति में विश्व-ब्रह्माण्ड के प्रकृत सत्य का अनुसंधान। यह जड़*

संसार से जीवन की सभी गंभीर समस्याओं का समाधान करने की चेष्टा थी। '' (विवेकानंद, वेदांत, 12 नवम्बर, 1897 को लाहौर में दिया गया भाषण) आपको एक बात और जानने की जरूरत है। यह सही नहीं है कि प्राचीन भारत में केवल अध्यात्मिक चिंतन का ही कल्ट था और भौतिकवादी चिंतन था ही नहीं। इस देश के दर्शन के शैक्षणिक पाठ्यक्रम में प्राचीन भारत के भौतिकवादी दर्शनों के रूप में ऋषि चार्वाक और लोकायत के दर्शन पढ़ाये जाते हैं। वेदों में पहली पुस्तक ऋग्वेद में मुख्यत: प्राकृतिक दुनिया को केन्द्र करके चर्चाएं हैं। आप में से बहुतेरों को शायद मालूम न हो कि बुद्ध भगवान में विश्वास नहीं करते थ भले ही उनको भगवान कहा जाता हो। यहां तक कि जैन धर्म के प्रवर्त्तक महावीर भी भगवान में विश्वास नहीं करते थे। इस देश में एक समय यह माना जाता था कि इस भौतिक जगत की हर चीज पंच भूत या पाँच मौलिक तत्वों, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से मिल कर बनी हुई है। कृछ लोग केवल चार तत्वों से ही बनी हुई मानते थे, वे आकाश को छोड़ देते थे। कणाद ऋषि ने कहा था कि हर चीज परमाणुओं से बनी हुई है। गणित में शून्य की महत्वपूर्ण भूमिका सबसे पहले इस देश में ही खोजी गई थी।

मार्क्सवादी होने के नाते, हम इतिहास में धर्म की भूमिका को स्वीकारते हैं जिसे बुर्जुआ विचारक नकारते हैं

लेकिन क्या इसका मायने यह है कि धार्मिक चिंतन ने कोई महत्वपूर्ण भूमिका अदा नहीं की? मार्क्सवादी होने के नाते, हम इस विचार से इत्तफाक नहीं रखते। मतभेद के बावजूद, मार्क्सवादी होने के नाते हम अतीत के धर्म प्रचारकों का बड़ा आदर करते हैं। इतिहास में धर्म ने जो एक समय प्रगतिशील भूमिका अदा की थी, हम उसकी दाद देते हैं।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

हमारा यह विश्वास है कि एक विशेष चरण में, धर्म ने सामाजिक प्रगति में मदद की थी। इसके विपरीत, जब बेकन, होब्स, लॉक, स्पिनोजा, कांट, फूयरबाख व अन्य बुर्जुआ विचारक नवजागरण के लिए लड़ रहे थे जिसने धर्म आधारित राजतंत्रीय सामंती व्यवस्था को उखाड़ फेंकते हुए बुर्जुआ लोकतांत्रिक गणतंत्र की स्थापना के लिए जमीन तैयार होने का मार्ग प्रशस्त किया था, और वे धार्मिक चिंतन के चंगुल से भूदासों को मुक्त कराने का प्रयास कर रहे थे, तब उन्होंने धर्म का मुकाबला कऱने के अपने प्रयास में यह माना था कि धर्म मानव जाति के लिए नुकसानदेह है, सत्य के लिए घातक है, इसलिए इसे त्याग देना चाहिए। उस समय, उन्होंने पूर्ववर्ती धर्म प्रचारकों के प्रति अनादर भी प्रदर्शित किया था। क्योंकि उन्हें इस बात का इल्म ही नहीं था कि धर्म मानव समाज में कब उभर कर आया था और किस सामाजिक जरूरत को पूरा करने के लिए आया था। महान कार्ल मार्क्स ही थे जिन्होंने इतिहास का वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित विचार-विश्लेषण करते हुए पहले पहल इस सवाल का जवाब दिया था। अगाध श्रद्धा भाव दर्शाते हुए मार्क्स ने कहा था : *''धार्मिक पीड़ा वास्तविक पीड़ा की ही अभिव्यक्ति है और साथ ही साथ वास्तविक पीड़ा के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन भी है। धर्म उत्पीड़ित लोगों के आंसू और उनकी आह है, हृदयहीन दुनिया का वह हृदय है, उसी तरह वह आत्माहीन परिस्थिति की आत्मा है।''* उनके अगले वाक्य के बारे में, मैं बाद में चर्चा करूंगा। महान एंगेल्स का मानना था कि : ''ईसाइयत और मजदूरों का समाजवाद, दोनों ही दासता और दुख-तकलीफों से आगामी मुक्ति का प्रचार करते हैं; ईसाई धर्म इस मोक्ष या मुक्ति को इस जीवन से परे, मरने के बाद स्वर्ग में होने की बात करता है; समाजवाद इसी दुनिया में, समाज के एक रूपांतरण में।'' (ऑन द अर्ली हिस्ट्री ऑफ क्रिश्चयनिटी)। दास और दासप्रभु व्यवस्था के खिलाफ ईसाइयत और इस्लाम के संघर्ष पर चर्चा करते हुए कॉमरेड शिवदास घोष ने भी बताया था : *''सामाजिक विकास के एक विशेष स्तर में पहुँचने पर धर्म ने ही इन्सान के जेहन में नीति-नैतिकता, मूल्यबोध, न्याय-अन्याय की धारणा, सेवा की भावना, दूसरे से घृणा न करना आदि सारे चिंतन पैदा करने में मदद की थी। इसके फलस्वरूप ही समाज में अनुशासन की भावना पैदा हुई और समाज के संगठित होने और मिलकर चलने में मदद मिली। इस दृष्टिकोण से भी सामाजिक प्रगति में धर्म ने एक भूमिका अदा की है।'' (मार्क्सवाद और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के कुछ पहलू)।*

अत: आप खुद ही देख सकते हैं कि मानव सभ्यता में एक समय धर्म की ऐतिहासिक भूमिका के प्रति मार्क्सवादी चिंतनकारों ने कितना गहरा आदर भाव व्यक्त किया था। दुर्भाग्यवश, इस सवाल पर मार्क्सवादियों के खिलाफ बहुत ज्यादा दुष्प्रचार फैलाया हुआ है। विज्ञान को औजार के तौर पर इस्तेमाल करते हुए केवल मार्क्सवाद ने ही दिखाया कि कैसे इतिहास के एक विशेष स्तर पर पहुँचने पर एक विशेष विचार या चिंतन उभर कर आता है। भाववादी या अध्यात्मवादी मानते हैं कि भौतिक जगतोपरि विचारों से या सुपर माइण्ड यानी परम-मन से मानव मन में विचार आता है। वे सोचते हैं कि एक परम-मन मानव-मन को नियन्त्रित करता है, ईमानदार व्यक्तियों के मनों में दिव्य-विचार पैदा होते हैं। अत:, वे विचार अचूक, अनुल्लंघनीय और शाश्वत सत्य होते हैं। पहले जमाने के भौतिकवादी भी विज्ञान के आवश्यक विकास के अभाव में इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सके कि विचार वस्तु से पैदा होता है। यूरोपीय नवजागरण काल में यान्त्रिक भौतिकवादियों ने मानव और मानव मन का वर्णन एक विशेष तरह की मशीन के तौर पर किया था। विज्ञान का इस्तेमाल करते हुए मार्क्स ने पहले पहल भाववादी हेगेल का खण्डन किया था और कहा था: *''विचार इसके सिवा और कुछ नहीं है कि यह मानव-मस्तिष्क द्वारा भौतिक संसार का प्रतिबिम्बन है और विचारों के रूप में उसका प्रकटीकरण है।''* (कार्ल मार्क्स, पूंजी खण्ड 1, दूसरे जर्मन संस्करण का परिशिष्ट, पृ. 237)

आधुनिक विज्ञान की ताजातरीन खोजों के आधार पर उनके योग्य छात्र कॉमरेड शिवदास घोष ने व्याख्या की थी कि : *''वस्तु मन से पहले है और वस्तु चिन्तन-चेतना से स्वतंत्र अस्तित्वमान है। यह बात आज संदेहातीत रूप से स्थापित हो चुकी है। हम यह भी जानते हैं कि 'पावर ऑफ ट्रान्सलेशन' की अपनी विशेष क्षमता लिये हुए मानव मस्तिष्क ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से बाहरी दुनिया या वस्तुगत वास्तविकता के साथ अन्तर्क्रिया करता है और इस प्रक्रिया के माध्यम से विचार और भाव पैदा होते हैं।''* (मार्क्सवाद और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के कुछ पहलू)। उन्होंने आगे दिखाया था : *''यहां तक कि मन की स्वतंत्रता की भी अपनी सीमा होती है। ये सीमाएं दो तरफ से उभरती हैं। एक है ठोस परिवेश। दूसरा है चिंतन का तरीका, यानी चिंतन प्रक्रिया जिसके जरिये जाने-अनजाने किसी के चिंतन करने का ढंग विकसित हुआ है--वह प्रक्रिया किसी के मन या सोच को सीमित कर देती है।''* (कॉमरेड शिवदास घोष, संकलित रचनाएं, अंग्रेजी खण्ड 3, क्रान्तिकारी चरित्र के प्रति श्रद्धांजली)।

अत: यह देखा गया है कि हालाँकि वस्तुगत भौतिक परिस्थितियाँ मुख्यत: एक जैसी ही थी, लेकिन प्रक्रिया या दृष्टिकोण में बुनियादी फर्क की वजह से, विद्यासागर और रामकृष्ण-बंकिमचन्द्र के, रवीन्द्रनाथ और शरतचन्द्र के, गांधीजी और सुभाषचन्द्र बोस के विचारों में बहुत सारे फर्क थे। मार्क्सीय दृष्टिकोण के आधार पर कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि आदिम समाज में, भौतिक परिस्थिति भगवान की धारणा के आविर्भाव के परिपूरक नहीं थी। लेकिन बाद के स्तर में स्थायी सम्पत्ति का आविर्भाव हुआ और दास-दासप्रभु सम्बन्ध कायम हुआ और समाज दास प्रभुओं द्वारा जारी किये गये आदेशों और उनके द्वारा बनाये गये नियम-कायदों के मुताबिक शासित होने लगा। दास प्रभुओं ने अपने द्वारा किये जाने वाले शोषण के स्वार्थ में एलान किया कि उनके आदेश और फरमान परम और अन्तिम हैं। उन्होंने दासों से पशुवत् व्यवहार किया और उन्हें क्रूर दमन-उत्पीड़न का शिकार बनाया। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया कि इन दबे-पिसे दासों की हाहाकार और दु:ख-तकलीफें उस समय के कुछ महापुरुषों में बड़ा भारी दर्द जगाने का सबब बनीं। उन्होंने देखा कि दास प्रभुओं द्वारा बनाये गये नियम-कायदों के माने जाने की वजह से समाज कमोबेश एक अनुशासित ढंग से चल रहा था। दूसरी तरफ, उनके चारों तरफ की दुनिया भी कुछ नियम-कायदों से शासित थी। सूर्योदय और सूर्यास्त, दिन और रात, ऋतुओं का चक्र, ज्वार-भाटा, जन्म और मृत्यु -सभी एक नियमबद्ध ढंग से आ रहे थे। अत:, कोई एक शासक होना चाहिये जो हर चीज को दिशा निर्देशित कर रहा है। वह दुनिया का प्रभु है, वह दासों और दास प्रभुओं सहित सब कुछ का सृजनकर्ता है। लिहाजा उसके आदेशों का पालन दासों के साथ-साथ दास प्रभुओं को भी करना चाहिए। उनके मतानुसार उसका यह आदेश क्या था? काफी सोच-विचार के बाद विशुद्ध विश्वास के आधार पर वे जिस निष्कर्ष पर पहुँचे, वह था कि ये सब ईश्वर या अल्लाह के आदेश हैं और दास व दासप्रभु सभी भगवान के बंदे हैं, इसलिये दासप्रभुओं को भी ईश्वरीय आदेश और नियम-कायदों को मानना चाहिये। यहाँ हमें लोगों के प्रति उनके बेहद प्यार और उनकी प्रतिभा का प्रमाण मिलता है। हालाँकि असलियत में भगवान कभी अस्तित्व में नहीं था, फिर भी मानव कल्याण के लिए उन्होंने जिस चिंतनशील मन को जाहिर किया वह हमारे आदर का पात्र है। इससे गुस्साये और बहुत खफा दास प्रभुओं ने धर्म प्रचारकों पर हमले किये, उनमें से कइयों को मौत के घाट उतार दिया गया। आज, धर्मस्थलों--मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों--के पास बहुत सारी धन-दौलत, सम्पत्ति है। वहाँ पादरी और पुरोहित बहुत ही एशों-आराम का जीवन जीते हैं। इतिहास की विडम्बना है कि जहाँ विभिन्न धर्मों के महान प्रवर्त्तकों को भुखमरी और जुल्म-सितमों का सामना करना पड़ा था और उस समय के शासक शोषकों के द्वारा कत्ल तक कर दिये गये थे, जो लोग आज उनके असली प्रतिनिधि होने का दावा करते हैं और बेशुमार धन-दौलत रखने वाले बड़े-बड़े मन्दिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों के मठाधीश बने बैठे हैं, वे वर्तमान शासक शोषक वर्ग द्वारा संरक्षित विलासतापूर्ण जीवन जी रहे हैं। पहले के जमाने में, ऐसा एक भी अन्याय नहीं था जिसके खिलाफ धर्म प्रचारक नहीं लड़े थे। आज समाज में इतने सारे दमन-उत्पीड़न और अन्याय हो रहे हैं। लाखों लोग भूखों मर रहे हैं, बिना इलाज के मर रहे हैं। भूखमरी के चलते आत्महत्या कर रहे हैं। बहुत सारे नौजवान बेरोजगारी की मुसीबत झेल रहे हैं, वृद्ध महिलाओं व बच्चियों समेत बहुत सारी महिलाओं से बलात्कार और गैंगरेप हो रहे हैं। किसी मन्दिर, मस्जिद या गिरजाघर के पुरोहित-पादरी ने इन सब सामाजिक बुराइयों, पापों और व्याधियों के खिलाफ लड़ना तो दूर की बात रही, क्या कभी प्रतिवाद की आवाज भी बुलन्द की है? अगर ईसा मसीह, मोहम्मद, शंकराचार्य, चैतन्य या विवेकानन्द, तर्क के लिए मान लें कि आज जिन्दा होते, तो क्या वे अपनी आँखें बन्द कर लेते और देवी-देवताओं की पूजा-पाठ में लीन रहते या इन सब बुराइयों के खिलाफ कमर कसने का आह्वान करते? इसके विपरीत, धार्मिक उन्माद को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा दिया जा रहा है, स्वयंभू देवपुरुषों-धर्मगुरूओं-बाबाओं की संख्या ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जा रही है और धर्मस्थलों की संख्या ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जा रही है, तथा अन्याय और अधार्मिक अपवित्र चीजों में हम ज्यादा से ज्यादा उछाल आया पाते हैं। उधर दूसरी तरफ पूँजीवाद जो नवजागरण और संसदीय लोकतन्त्र की स्थापना के दौर में धर्म के खिलाफ लड़ा था, इसकी मौजूदा प्रतिक्रियावादी अवस्था में, यह लोगों को धार्मिक अंधविश्वास में डुबाये रखने की कोशिश कर रहा है। क्योंकि आज इसके मरणासन्न दौर में, यह धर्म में एक गहरा दोस्त पाता है। धर्म के जरिये, "हर चीज पूर्व-निर्धारित है", "ईश्वरीय चिंतन-मनन है", "नियति है", "पिछले जन्म मे किये पापों का फल है", "अमीर और गरीब भगवान के बनाये हुये हैं", "हँसते-हँसते सभी दु:ख-दर्द झेलने से मृत्यु के बाद स्वर्ग का पथ-प्रशस्त होगा" और ऐसे ही अन्य भाग्यवादी अंधविश्वासी चिंतन और रूढ़िवाद आज गरीबों को अच्छी तरह समझाये जा सकते हैं। यही कारण है कि मार्क्स ने, जो इससे पहले मैंने उद्धत किया था उसके अंत में, कहा था कि "धर्म लोगों के लिए अफीम है।" इसका मतलब है कि दमनकारी बुर्जुआ वर्ग इसके पहले के दौर के सामंती रजवाड़ों की तरह लोगों को जकड़बन्दी में रखने के लिए धर्म को अफीम की तरह इस्तेमाल कर रहा है। एक और बिन्दू है। आज लोगों को तबाह कर रही कारखानाबन्दी, तालाबन्दी, बेरोजगारी, मंहगाई, टैक्स बढ़ोतरी, शिक्षा-चिकित्सा की कीमतों में वृद्धि, जनवादी अधिकारों के हनन या महिलाओं पर अत्याचार और बलात्कार, सामूहिक बलात्कार जैसी समस्याओं के बारे में क्या किसी धर्मग्रन्थ में कोई चर्चा है? गीता-रामायण-महाभारत-बाइबिल-कुरान में क्या इसके बारे में कोई दिशा-निर्देश है कि पूँजीवाद क्या है, साम्राज्यवाद क्या है, समाजवाद क्या है, संसदीय लोकतन्त्र क्या है, किस राजनीति या राजनीतिक पार्टी का समर्थन किया जाये? ...नही, कोई जिक्र नहीं है क्योंकि यह सम्भव नहीं है। उस समय ये समस्याएं या सवाल समाज में उभर कर ही नहीं आये थे। अत: तत्कालीन धर्म प्रचारकों के मनों में ये विचार आये ही नहीं थे। उन्होंने जो कुछ कहा, वह उस समय के परिप्रेक्ष्य में कहा था। यही वजह है कि धर्म आज जीवन की ज्वलन्त समस्याओं को हल नहीं कर सकता। उल्टे, शोषक बुर्जुआ वर्ग द्वारा अपने दकियानूसी दमनात्मक प्रतिक्रियावादी वर्ग शासन के लम्हों को बढ़ाने के लिए धर्म का इस्तेमाल किया जा रहा है। इसके बावजूद, हम यकीन करते हैं कि धर्म में ईमानदारी से विश्वास करने वाले जो धर्म को व्यापारिक फायदे के लिए इस्तेमाल नहीं करते या धार्मिक संगठनों को चलाने के लिए आर्थिक सहायता पाने के लिए पूँजीपतियों-व्यापारियों-कालाबाजारियों की खुशामन्द नहीं करते, उन्हें आज के जमाने के अन्याय और दमन-उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष में आगे आना होगा और संघर्ष में शामिल होना होगा।

क्या विवेकानन्द के आदर्श राह-रोशन कर रहे हैं?

अब, मैं विवेकानन्द, गान्धीजी और रवीन्द्रनाथ के आदर्शों पर संक्षेप में चर्चा करूँगा। उन सबका हम आदर करते हैं क्योंकि वे सब महापुरुष ईमानदार आदमी थे और जन-कल्याण चाहते थे। मैं वही बात कह रहा हूँ जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष के छात्र के तौर पर मैंने समझी हैं। मैं विवेकानन्द पर आऊँ, इससे पहले यह

(शेष पृष्ठ 4 पर)

नांगलोई व विवेक विहार में दो बच्चियों के साथ हुए सामूहिक बलात्कार काण्ड के खिलाफ प्रदर्शन

जंतर मंतर : महिलाओं से बलात्कार की बढ़ती घटनाओं पर रोष प्रकट करते हुए एआईएमएसएस, एआईडीएसओ और एआईडीवाईओ कार्यकर्ता

दिल्ली : नांगलोई में ढाई साल की बच्ची और विवेक विहार में पांच साल की बच्ची के साथ हुए सामूहिक बलात्कार ने दिल्ली के जनमानस को हिला कर रखा दिया है। देश की राजधानी में जहां राज्य सरकार और केन्द्र सरकार दोनों ही राज में हैं वहां पर महिलाओं व बच्चियों पर दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे वीभत्स अपराध महिलाओं की सुरक्षा के प्रति सरकार की गंभीरता पर सवाल खड़ा करते हैं। गाय को माता का दर्जा देने वाली भाजपा की केन्द्र सरकार की नाक के नीचे माताओं, बेटियों और बहनों पर बढ़ते अपराध इस बात के सबूत हैं कि राजनीति में नैतिकता और मूल्यों को धता बताकर सरकार और नेता मात्र अपना वोट बैंक तैयार करने में लगे हैं। सबसे बड़े दुख की बात यह है कि अत्यधिक बेशर्मी से केजरीवाल और नरेन्द्र मोदी एक-दूसरे को इन सब घटनाओं का जिम्मेदार बता कर दिल्ली में महिलाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी से अपना पल्ला झाड़ रहे हैं जबकि अपराधों को बढ़ावा देने वाले प्रमुख कारणों को जानबूझकर केन्द्र और राज्य दोनों सरकारें नजरअंदाज कर रही हैं और कोई भी ठोस कदम नहीं उठा रही हैं। उन कारणों में प्रमुख हैं शराब की बिक्री को बढ़ावा और अश्लीलता का प्रचार-प्रसार। छात्र-नौजवानों को नशा करने और अश्लील सामग्री देखने का आदी बनाया जा रहा है। इससे समाज में लोगों, विशेष कर युवाओं की नैतिक रीढ़ को तोड़ा जा रहा है ताकि सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ कोई उठ खड़ा न हो सके। परिणामस्वरूप महिलाएं, विशेष कर विरोध कर पाने में असमर्थ बच्चियाँ अपराध की शिकार हो रही हैं। दिल्ली बलात्कार की राजधानी बन कर रह गई है जहाँ महिलाएं कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं।

इसके विरोध में एआईएमएसएस, एआईडीएसओ तथा एआईडीवाईओ ने मिलकर 19 अक्टूबर को जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन किया। एसयूसीआई(सी)दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्राण शर्मा, एआईडीवाईओ की दिल्ली राज्य सचिव प्रकाश देवी, एआईडीएसओ के दिल्ली राज्याध्यक्ष कॉ. भास्करानंद, एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. रितु कौशिक ने सम्बोधित किया। प्रदर्शनकारियों ने बलात्कार के दोषियों को उदाहरणमूलक सजा देने तथा सरकार से शराब की बिक्री पर रोक लगाने की मांग की। प्रदर्शनकारियों ने दामिनी बलात्कार काण्ड के दोषियों को तुरंत फांसी देने तथा वर्मा कमेटी की सिफारिशों को भी लागू करने की मांग की।

अपनी लम्बित मांगों के लिए आशा वर्करों ने किया विरोध प्रदर्शन

भिवानी : 15 अक्तूगर को एआईयूटीयूसी से सम्बन्धित आशा कार्यकर्ता यूनियन हरियाणा के बैनर तले आशा वर्करों ने अपनी लम्बित मांगों को लेकर शहर में प्रदर्शन किया। आशा वर्कर दिनोद गेट चौक पर एकत्रित हुई और जुलूस घंटा घर चौक, हांसी गेट, पुराना बस अड्डा होता हुआ लघु सचिवालय पहुंचा और उपायुक्त, भिवानी की मार्फत मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार को ज्ञापन भेजा।

आशा कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए यूनियन प्रधान गुड्डी धनाना ने कहा कि भाजपा की खट्टर सरकार ने शासन में आने के बाद 500 रुपये मासिक मानदेय भत्ता देना बंद कर दिया, आइटम-वाइज इन्सेन्टिव की राशि में भी कटौती कर दी और फैसिलीटेटर का पद समाप्त कर दिया। इससे आशा कार्यकर्ताओं में भारी नाराजगी है। उन्होंने आशा कार्यकर्ताओं को सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने, और तब तक उन्हें मेहनताना न्यूनतम 15000 रुपये मासिक देने, पीएचसी, सीएचसी और सरकारी जिला अस्पताल में आने-जाने का नि:शुल्क बस पास देने और आशा कार्यकर्ताओं को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने की मांग की। एआईयूटीयूसी के जिला कमेटी सदस्य कॉ. राजकुमार ने भी प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित किया।

भिवानी, हरियाणा में रोष जताते हुए आशा कर्मी

छात्रों ने सौंपा मांगों का ज्ञापन

दुर्ग (छ.ग.) : कॉलेज में पीने के साफ पानी, गर्ल्स कॉमन रूम की सफाई व पानी सप्लाई, लाइब्रेरी से सिलेबस अनुसार किताबें उपलब्ध कराने, कॉलेज द्वारा संचालित आजाद हॉस्टल का नाम आजाद की बजाय शहीद चन्द्रशेखर आजाद लिखने, जनभागीदारी समिति के नाम पर बेतहाशा फीस वसूली बंद करने एवं स्ववित्तीय कोर्स को सामान्य कोर्स में बदलने की मांग करते हुए ए.आई.डी.एस.ओ. साइन्स कॉलेज कमेटी द्वारा साइन्स कॉलेज के प्राचार्य को ज्ञापन सौंपा गया। कमेटी के अध्यक्ष प्रवीण शर्मा ने बताया कि इन समस्याओं पर प्राचार्य से विस्तार से चर्चा की गई। प्राचार्य ने इन समस्याओं के उचित समाधान का आश्वासन दिया।

छात्र-युवा विरोधी नीतियों का विरोध

दुर्ग (छ.ग.) : आउटसोर्सिंग बंद करने, शिक्षकों के रिक्त पदों को नियमित आधार पर भरने, सबको रोजगार देने तब तक बेरोजगारी भत्ता देने, न्यूनतम मजदूरी 15 हजार रुपये मासिक देने, श्रम कानूनों में मजदूर-विरोधी बदलाव लाना बंद करने, ठेकेदारी प्रथा बंद करने, सरकारी माडल स्कूलों को पीपीपी के तहत निजी हाथों में सौंपने का निर्णय वापिस लेने, 8वीं तक बोर्ड परीक्षा व पास-फेल प्रणाली लागू करने की मांग करते हुए एआईडीएसओ व एआईडीवाईओ ने 20अक्तूबर को कचहरी चौक पर प्रदर्शन किर्या। कॉ. विश्वजीत हारोडे व आत्माराम साहू ने आन्दोलन गठित करने की अपील की।

जन समस्याओं को दूर करने की उठी मांग

मुरादाबाद (उ.प्र.) : बुद्धिविहार में पार्को से कब्जा हटा कर सौन्दर्यकरण करने, आवारा कुत्तों व बन्दरों को पकड़ने, गलियों की नियमित सफाई व फोगिंग कराने, भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने आदि मांगों पर डा. नरेन्द्र के नेतृत्व में एआईडीवाईओ की ओर से नगर आयुक्त के कैम्प कार्यालय पर 31 अक्तूबर को प्रदर्शन कर उनको ज्ञापन सौंपा गया।

एस्सेल बिजली कम्पनी को हटाने की मांग पर धरना-प्रदर्शन

सागर (म.प्र.) : निजी विद्युत वितरण कम्पनी एस्सेल को नगर से हटाने की मांग पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की सागर जिला सांगठनिक कमेटी के तत्वावधान में 26 अक्तूबर को यहां बस स्टेण्ड के पास धरना दिया गया एवं प्रदर्शन कर उर्जा मंत्री राजेन्द्र शुक्ल को ज्ञापन सौंपा गया। धरने-प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए पार्टी के जिला सचिव कॉ. रामवतार शर्मा ने कहा कि सागर नगर में जब से एस्सेल कम्पनी स्थापित हुई है, तभी से उपभाक्ताओं को ड्योढ़े दूने दामों के बिलों का भुगतान करना पड़ रहा है। कम्पनी ने आते ही सबसे पहले तो अधिक खपत दर्शाने वाले मीटर लगाने शुरू कर दिये। करोड़ों रुपये मुनाफा बटोरने वाली कम्पनी की ओर सरकारी कम्पनी का अभी तक 36 करोड़ रुपये का भुगतान बकाया है। उज्जैन में इसका अनुबंध निरस्त कर दिया गया है तो सागर में देर क्यों की जा रही है? नियामक आयोग की गाइड लाइन के मुताबिक मीटर रीडिंग हर महीने के आखरी सप्ताह में की जानी चाहिए लेकिन एस्सेल कम्पनी द्वारा 35-40 दिनों के अन्तराल पर की जा रही है। इससे उपभोक्ताओं को बिलों का ज्यादा भुगतान करना पड़ रहा है। सरकारी कम्पनी से अनुमति लिये बगैर ही एस्सेल खंबों पर मॉनीटरिंग मीटर लगा रही है। एस्सेल कम्पनी का जब तक नगर में अनुबंध खत्म न हो तब तक आन्दोलन जारी रखने की उपभोक्ताओं से उन्होंने अपील की।

कार्यक्रम का संचालन पार्टी की जिला सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉ.अशोक कुशवाहा ने किया। कार्यक्रम में संजय तिवारी, गणेश पटेल, तेजभान साहू, अरविंद पटेल, सोना कुशवाहा आदि ने भी भाग लिया।

यूजीसी पर प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर लाठीचार्ज की निन्दा

दिल्ली : एम फिल और पीएचडी करने वाले छात्रों की नोन-नेट (राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा) की फेलोशिप बंद करने के यूजीसी के नाजायज कदम का विरोध करने वाले छात्रों पर 27 अक्तूबर को पुलिस द्वारा यूजीसी कार्यालय के बाहर किये गये लाठीचार्ज की एआईडीएसओ ने कड़ी निन्दा की। एआईडीएसओ के दिल्ली राज्य अध्यक्ष भास्करा नंद ने 28 अक्तूबर को जारी अपने बयान में कहा कि पुलिस की जालिमाना कार्रवाही ने एक बार फिर मोदी सरकार के असली चेहरे से नकाब हटा दिया है, जिसके शासन में जायज जनवादी मांग के लिए उठने वाली जनता की हर आवाज को दबा दिया जायेगा। छात्र यूजीसी कार्यालय के बाहर इकट्ठा हुए थे और शांतिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन कर रहे थे कि अचानक सैकड़ों पुलिस वाले और सीआरपीएफ के जवान आये और प्रदर्शनकारियों पर लाठियां बरसाने लगे, यहां तक कि छात्राओं के साथ भी पुरुष पुलिसियों ने बदतमीजी की और गाली-गलौज भरी भाषा प्रयोग की। इसमें लगभग 15 छात्र गंभीर रूप से घायल हुए, पुलिस द्वारा हिरासत में लेने के बाद, बसों के अन्दर भी छात्रों को पीटा गया। 35 से ऊपर छात्रों को गिरफ्तार किया गया। बातचीत करने की बजाय यह पुलिस कार्रवाई जनवादी अधिकारों पर बड़ा हमला है, जो हम आज देख रहे हैं। एआईडीएसओ ने लाठीचार्ज के जिम्मेदार पुलिस अधिकारियों को तुरन्त निलम्बित करने, नोन-नेट फेलोशिप रद्द करने का फैसला वापिस लेने और इसे बढ़ाया जाने की मांग की। एआईडीएसओ ने प्रदर्शनकारी छात्रों के साथ उनकी जायज मांग के लिए संघर्ष में एकजुटता का इजहार किया।

डीवाईओ ने लगाया मेडिकल कैम्प

आरोन, मध्य प्रदेश : ऑल इण्डिया डीवाईओ द्वारा गत दिनों स्थानीय सियाराम कालोनी में एक नि:शुल्क मेडिकल कैम्प लगाया गया। इसमें डा. चंद्रेश, डा. मुलायम अली, डा. एससी गोयल व डा. चांदसी ने लगभग 200 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया और मुफ्त में दवाइयां वितरित की गई। कैम्प में स्वयंसेवक के तौर पर बड़ी संख्या में डीवाईओ व एसयूसीआई(सी) के क्षेत्रीय कार्यकर्ता शामिल हुए।

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण ...

(पृष्ठ 2 का शेष)

आवश्यक है कि मैं एक महान हस्ती के बारे में कुछ शब्द कहूँ जो विवेकानन्द द्वारा अत्यन्त सम्मानित थे और इस धरती के एक और महान सपूत थे। वे हैं पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जिन्होंने सभी धार्मिक संस्कृत धर्मग्रन्थों के बारे में अध्ययन से 'पण्डित' और 'विद्यासागर' की उपाधि हासिल की थी। उनका जमाना था जब यूरोप में नवजागरण आन्दोलन अन्तिम चरण में था। उस समय के विज्ञान की खोजों के आधार पर, यान्त्रिक भौतिकवाद, अज्ञेयवाद और धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद के पैरोकार धार्मिक विचारों के खिलाफ सख्ती से लड़ाई लड़ रहे थे। दूसरी तरफ, यह देश ब्रिटिश हुकुमत के शिकंजे में था और इस पर मध्ययुगीन, सामंती और धार्मिक दमन-उत्पीड़न की आफत ढायी हुई थी। औद्योगिक पूँजी शैशवास्था में थी। राष्ट्रीय चिंतन का उन्मेष हो रहा था। इस पृष्ठभूमि में, इस अत्यन्त शिक्षित और विद्वतापूर्ण व्यक्तित्व ने, जो शास्त्रों में पारंगत और अंग्रेजी भाषा के वाहन के जरिए पाश्चात्य नवजागरण के विचारों से अच्छी तरह वाकिफ थे जो उन्होंने केवल 21 साल की उम्र में ही बारीकी से सीख ली थी, 1853 में ब्रिटिश सरकार को सूचित किया था कि *''सांख्य और वेदांत भ्रांतिपूर्ण दर्शन हैं। ... जब तक इन्हें संस्कृत कोर्स में पढ़ाया जाता है, इनके प्रभाव को निष्प्रभावी करने के लिए हमें अंग्रेजी कोर्स में तर्कसंगत दर्शन पढ़ाने के जरिये इनका विरोध करना होगा। ... जहां आधुनिक यूरोप के ज्ञान का प्रकाश जिस भी हद तक पहुंच रहा है, वहां इस देश के प्राचीन शास्त्रों के प्रभाव में उसी अनुपात में ह्रास हो रहा है। ... इसलिए आधुनिक यूरोप की इस शिक्षा को ज्यादा से ज्यादा फैलाना चाहिए। ... हमें ऐसे शिक्षकों की जरूरत है, जिन्हें बंगाली और अंग्रेजी दोनों भाषाओं की जानकारी हो और साथ ही वे धार्मिक पूर्वाग्रहों से मुक्त हों।''* तत्कालीन सरकार इस पर सहमत नहीं हुई। विद्यासागर भगवान में विश्वास नहीं करते थे। उनके द्वारा लिखित पाठ्य पुस्तकों में भगवान के बारे में कोई चर्चा नहीं थी। इसने तीखी आलोचना को न्यौता दे दिया था और ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक बिशप मर्डोक ने विद्यासागर को ''हद दर्जे का भौतिकवादी'' करार दिया था। निरीश्वरवादी विद्यासागर के प्रति अपना मान-सम्मान देने के लिए रामकृष्ण उन्हें दक्षिणेश्वर स्थित काली मन्दिर में पधारने के लिए आमन्त्रित करने उनके घर गये थे। लेकिन विद्यासागर वहां नहीं गये। क्योंकि वे मन्दिर, मूर्तिपूजा या धार्मिक कर्मकाण्ड में विश्वास नहीं करते थे। हम में से बहुतेरे लोग इस हकीकत से शायद वाकिफ नहीं हैं। विद्यासागर के कई सालों के बाद विवेकानंद का आविर्भाव हुआ। उस समय, यूरोप और इस देश की परिस्थिति काफी हद तक बदल चुकी थी। यूरोप में नवजागरण का चरण पूरा हो चुका था। पूँजीवादी संकट उभर कर सतह पर आ रहा था। फ्रांस के मजदूर वर्ग ने 1871 में अपना खून बहा कर एक ऐतिहासिक संघर्ष के जरिये कुछ महीनों तक सत्ता पर कब्जा कर लिया था। शासक फ्रांसीसी पूँजीपति वर्ग, जिसने समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे का नारा बुलंद किया था, वह प्रतिवाद करने वाले मजदूरों को सजाये मौत देने की जगहों पर ले गया और उनको मौत के घाट उतार दिया। पूँजीवाद मोनोपोली यानी एकाधिकार के चरण की ओर बढ़ रहा था और मजदूर वर्ग की क्रान्ति की भयग्रंथी उनके मन में घर करती जा रही थी। अत: जिन तर्कसंगत वैज्ञानिक विचारों को पहले उसने प्रोत्साहन दिया था, अब उनकी जगह यह पुराने गये-गुजरे धार्मिक विचारों के पुनरुत्थान को बढ़ावा दे रहा है। टालस्टॉय जैसे महान मानवतावादी ने पूँजीवाद द्वारा जनित तमाम संकटों के लिए विज्ञान और औद्योगिक क्रान्ति को जिम्मेदार ठहराया था। अत: उन्होंने धार्मिक विचारों को वापिस लाने का आह्वान किया था। यूरोप में धर्म-प्रेमियों का एक हिस्सा तब गीता, वेद-वेदांत के प्रति अनुरक्ति दिखा रहा था। दूसरी तरफ, ईसाई मिशनरी यहां लगातार यह प्रचार कर रहे थे कि भारत असभ्य बर्बर अवस्था में था और वे ही पश्चिम से यहां अज्ञान-मुक्ति लाये थे। शिक्षित ब्रह्म समाज ने भी हिन्दुओं को असभ्य माना था और अलग सम्प्रदाय के तौर पर शहरों में बस गये थे। यंग बंगाल से जुड़ा हुआ एक अतिवादी ग्रुप उस समय इस बात पर पश्चाताप कर रहा था कि वे यूरोप की बजाय भारत में पैदा हुए। इस प्रक्रिया में, यह यंग बंगाल ग्रुप वस्तुत: देशी यूरोपियनों में तब्दील हो गया था। इसके साथ-साथ इस देश की औद्योगिक पूँजी उस समय अपनी शैशवास्था से युवा अवस्था में प्रवेश कर चुकी थी और राष्ट्रवादी विचार जोरशोर से आने लगे थे।

इस उभारशील राष्ट्रवाद के ताकतवर पैरोकार के तौर पर विवेकानंद का आविर्भाव हुआ था और भारत की सर्वोच्चता प्रतिष्ठित करने में खुद को लगा दिया था। मान-मर्दित राष्ट्रवाद ने उनके जरिये भारत की सर्वोच्चता प्रतिष्ठित करने के प्रयास में प्राचीन भारत की ओर देखा। उन्होंने दिखाया कि जब सारा यूरोप लगभग जंगल के कानून की दशा में था, तब यहां वेद-वेदांत के शक्तिशाली दर्शन का अनुशीलन (कल्टीवेशन) चल रहा था। अत:, एक हाथ में राष्ट्रवाद का झण्डा बुलंद करते हुए उन्होंने दूसरे हाथ में बोदे, कमजोर, पुराने पड़ चुके वेदांत को प्रोजेक्ट किया था। उन्होंने कहा था कि 'जहां हमें पश्चिम से विज्ञान लेने की जरूरत है, वहीं बदले में पश्चिम को वेदांत दिया जाना चाहिए'। उन्होंने सभी सवालों का जवाब और सभी समस्याओं का समाधान अध्यात्मवादी वेदांत दर्शन द्वारा प्रदान किये गये दृष्टिकोण के आधार पर ढूंढ़ने की कोशिश की थी। अत:, जहां विद्यासागर वेदांत को भ्रांत दर्शन प्रणाली मानते हुए इसके प्रभाव से मन को मुक्त करना चाहते थे, वहीं विवेकानंद का मिशन उसी वेदांत की सर्वोच्चता साबित करना था।

ब्रह्माण्ड की सृष्टि के बारे में, विवेकानंद ने कहा था : ''जगत-प्रपंच के विकास को हमारे शास्त्रों में 'सृष्टि' कहा गया है। परन्तु ध्यान रहे, 'सृष्टि' अंग्रेजी का क्रियेशन नहीं है। अंग्रेजी में संस्कृत शब्दों का यथार्थ अनुवाद नहीं होता। बड़ी मुश्किल से मैं संस्कृत के भाव अंग्रेजी में व्यक्त करता हूँ। 'सृष्टि' का वास्तविक अर्थ है -प्रक्षेपण। ... जितनी शक्तियाँ हैं, चाहे तुम उन्हें गुरुत्वाकर्षण कहो, चाहे आकर्षण या विकर्षण कहो, अथवा ताप कहो, या विद्युत, वे सब उसी शक्ति-तत्व के विभिन्न रूप हैं। चाहे मनुष्यों के बाह्य इन्द्रियों का व्यापार कहो, या उनके अन्त:करण की चिन्तनशक्ति ही कहो, है सब एक ही शक्ति से उद्भुत, जिसे प्राणशक्ति कहते हैं। अब यह प्रश्न उठ सकता है कि प्राण क्या है? प्राण स्पन्दन या कम्पन है। जब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का विलय इसके चिरन्तन स्वरूप में हो जाता है, तब ये अनन्त शक्तियाँ कहाँ चली जाती हैं? क्या तुम सोचते हो कि इनका भी लोप हो जाता है? नहीं, कदापि नहीं। यदि शक्तिराशि बिल्कल नष्ट हो जाए, तो फिर भविष्य में जगत्तरंग का उत्थान कैसे और किस आधार पर हो सकता है? क्योंकि गति तो तरंगाकार संचरण है, जो उठती है, गिरती है; फिर उठती है, फिर गिरती है। ... अच्छा, तो उस समय भूतों (मैटर) की क्या अवस्था होती है। शक्तियाँ सर्वभूतों में ओतप्रोत हैं। वे उस समय आकाश में लीन हो जाती हैं, इस आकाश से फिर भूतसमूहों की सृष्टि होती है। यह आकाश ही आदि-भूत है। यही प्राण की शक्ति से स्पन्दित होता रहता है, और प्रत्येक नयी सृष्टि के साथ ज्यों ज्यों प्राण का स्पन्दन तीव्र होता जाता है, त्यों त्यों आकाश की तरंगें क्षुब्ध होती हुई चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र आदि के आकार धारण करती जाती हैं। ... सूक्ष्मतर तत्व से स्थूलतर तत्व की उत्पत्ति होती है, सबसे पीछे स्थूल भूत की सृष्टि होती है। यही बाह्यतम वस्तु है, और इसके पीछे सूक्ष्मतर भूत विद्यमान है। यहाँ तक विश्लेषण करने पर भी, हमने देखा कि सम्पूर्ण संसार केवल दो तत्वों में पर्यवसित किया गया है, अभी तक चरम एकत्व पर हम नहीं पहुँचे। शक्ति-तत्व के एकत्व को प्राण, और जड़त्व के एकत्व को आकाश कहा गया है। क्या इन दोनों में भी कोई एकत्व पाया जा सकता है? ये भी क्या एक तत्व में पर्यवसित किये जा सकते हैं? हमारा आधुनिक विज्ञान वहाँ मूक है, वह किसी तरह की मीमांसा नहीं कर सका। और यदि इसे इसकी मीमांसा करनी ही पड़े, तो जैसे उसने प्राचीन पुरुषों की तरह आकाश और प्राणों का आविष्कार किया है, उसी तरह उनके मार्ग पर उसे आगे भी चलना होगा। जिस एक तत्व से आकाश और प्राण की सृष्टि हुई है, वह सर्वव्यापी निर्गुण तत्व है, जो पुराणों में ब्रह्मा, चतुरानन ब्रह्मा, के नाम से परिचित है और मनस्तत्व के अनुसार जिसको 'महत्' भी कहा जाता है। यहीं उन दोनों तत्वों का मेल होता है। ... प्रलय होने पर जगत्-प्रपंच सूक्ष्मातिसूक्ष्म होकर अपनी प्राथमिक अवस्था को प्राप्त होता है, कुछ काल उसी शांत अवस्था में रह कर फिर विकसित होता है। यही सृष्टि है, प्रक्षेपण है।'' (विवेकानंद, वेदांत, संचयन पृष्ठ 148-149)। इसके द्वारा उन्होंने कहा, ''परम ब्रह्मा ही सत्य है''। बाकी सब उसके प्रक्षेपण हैं। विवेकानंद के मतानुसार, प्राण और आकाश ब्रह्मा या महत् से उद्भुत होते हैं। प्राण उर्जा है ओर आकाश पदार्थ है। शुरूआती अवस्था में, दोनों सूक्ष्मतर रहते हैं। बाद में, प्राण आकाश के सम्पर्क में आता है, स्पन्दन या कम्पन पैदा करता है। फिर आकाश स्थूलतर से स्थूलतर होता जाता है। इस तरह, सूरज, चाँद, और दूसरे नक्षत्रों का आविर्भाव हुआ। फिर दोनों बारी-बारी से सूक्ष्मतर से सूक्ष्मतर होते जाते हैं और ब्रह्मा में विलीन हो जाते हैं। यह एक चक्र में चलता रहता है। इसलिए, हर चीज पूर्व-निर्धारित है। प्राण और आकाश दोनों ब्रह्मा से उत्पन्न होते हैं, बड़े से बड़े होते जाते हैं, फिर सूक्ष्म से सूक्ष्म हो जाते हैं और फिर ब्रह्मा में ही विलीन हो जाते हैं। दोबारा फिर यही प्रक्रिया दोहराई जाती है।

हेगेल की धारणा क्या थी, इसे मैं महान फ्रेडरिक एंगेल्स की भाषा में रखता हूँ, "हेगेल द्वारा उसका अनुमोदन स्वत: स्पष्ट है, क्योंकि जो हमें वास्तविक संसार परिज्ञात कराता है वही वस्तुत: उसकी विचार वस्तु है-जो संसार को क्रमश: परम विचार का प्रत्यक्षीकरण बना देती है, जो परम विचार अनन्त काल से विश्व से मुक्त और उसके पहले से कहीं पर अस्तित्वमान था।" उनके कथनानुसार प्रकृति केवल विचार का "अन्यकरण" मात्र होने के कारण काल में विकास करने में असमर्थ है-वह केवल दिक् में ही अपने बहुगुणत्व का विस्तार कर सकती है, जिस कारण वह अपने में सन्निविष्ट विकास के सभी चरणों का एक ही समय में और वह उसी प्रक्रिया की पुनरावृत्ति के लिए अनन्त काल तक विवश बनी रहती है।" (लुडविग फायरबाक और क्लासिकल जर्मन दर्शन का अंत, पृ. 26) क्या आधुनिक विज्ञान की इतनी सारी खोजों के बाद भी इन विचारों को स्वीकार किया जा सकता है?

समाजवाद के पाश्चात्य विचार से प्रभावित होकर विवेकानंद ने कहा था : ''मानव समान का शासन चार वर्णों-ब्राह्मणों (पुरोहितों), क्षत्रियों (सैनिकों), वैश्यों (व्यापारियों) और शुद्रों (मजदूरों) के द्वारा बारी-बारी से किया जाता है। ... अन्त में, शुद्रों (श्रमिकों) का शासन आयेगा। इसका लाभ शारीरिक सुखों के वितरण में होगा-इसकी हानि (शायद) संस्कृति की गिरावट में होगी। सामान्य संस्कृति का बड़ा भारी वितरण होगा, लेकिन असाधारण प्रतिभाएं कम से कम होंगी।'' इसलिए, उनके मतानुसार, हालांकि शुद्रों या श्रमिकों के शासन में, 'शारीरिक या भौतिक सुखों का वितरण' होगा, लेकिन ज्ञान और संस्कृति में गिरावट आयेगी। उनका यह विचार भी इस भाव से आता है कि बौद्धिक शक्ति और शारीरिक श्रम में अन्तर शाश्वत है। आगे 'सृष्टि' के उनके तत्वसिद्धांत के अनुसार ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों और शुद्रों के शासन चक्रवत् बार बार आयेंगे। क्या ऐतिहासिक और तर्कसंगत माना जा सकता है? तर्क की खातिर अगर मान भी लें, तो यह मान लेना पड़ेगा कि आदिम समाज, सामंतवाद और समाजवाद का आविर्भाव चक्रवत् घूमकर बार बार होगा।

देखिये वेदांत में विश्वास कैसे उन जैसे एक महापुरुष में इतनी सारी समस्या का सबब बन गया। दूसरी तरफ, उन्होंने विज्ञान की प्रशंसा में कहा था : ''इस अन्तरिक्ष जगत के बारे में आधुनिक खगोल-विदों और वैज्ञानिकों की क्या राय है हम जानते हैं। हम यह भी जानते हैं कि इसने पुराने धर्मपरायणों को कितना नुकसान पहुँचाया है। लगता है जैसे उनके घरों पर एक पर एक बम बरसाये जा रहे हैं।'' दूसरी तरफ, उन्हीं विवेकानंद ने टिप्पणी की थी कि ''हम कहते हैं कि न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण की खोज की। क्या यह कहीं कोने में बैठा उनका इन्तजार कर रहा थ? यह उनके अपने मन में था; समय आया और उन्होंने उसे ढूँढ़ निकाला। तमाम ज्ञान जो दूनिया ने अब तक पाया है, मन से आता है; आपका मन विश्व ब्रह्माण्ड का असीम पुस्तकालय है। बाहरी दुनिया महज सुझाव है, मौका है जो आपको अपने मन का अध्ययन करना आरम्भ करवा देता है, लेकिन आपके अध्ययन का विषय सदा आपका मन होता है। सेब के गिरने ने न्यूटन को सुझाव दिया। ... उन्होंने

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कैसे तैयार हुई थी महान नवम्बर क्रान्ति की जमीन

कैसे तैयार हुई महान नवम्बर क्रान्ति की जमीन
(गतांक से आगे)

जाड़ा आने वाला था– रूस का भयंकर जाड़ा। मैंने व्यवसायियों को कहते सुना : ''जाड़ा हमेशा से रूस का सबसे अच्छा दोस्त रहा है। अब वह शायद हमें क्रांति से छुटकारा दिला देगा।'' बर्फ़ीले मोर्चे पर आफ़त के मारे निरुत्साह सैनिक पहले ही की तरह फ़ाक़े कर रहे थे और मारे जा रहे थे। रेलों की व्यवस्था टूट रही थी, ख़ुराक की कमी हो रही थी और कारख़ाने बन्द हो रहे थे। निराशा की चरम सीमा पर पहुंच कर जन-साधारण चीख पड़ा–पूंजीपति वर्ग ही जनता के जीवन को अन्तर्ध्वस्त कर रहा है, वही मोर्चे पर हार के लिए जिम्मेदार है। जनरल कार्नीलोव ने जब सार्वजनिक रूप से कहा : ''हमें रीगा देकर देश को उनके कर्त्तव्य के प्रति सचेत करने की क़ीमत अदा करनी पड़ेगी,'' उसके ठीक बाद ही यह नगर दुश्मन के हवाले कर दिया गया।

वर्ग-युद्ध इतना उग्र हो सकता है, अमेरिकियों के लिए यह अविश्वसनीय है। लेकिन मैं खुद उत्तरी मोर्चे पर ऐसे अफ़सरों से मिल चुका हूँ, जो साफ़-साफ़ कहते थे कि वे सैनिक समितियों से सहयोग करने की अपेक्षा युद्ध में पराजय को अधिक श्रेयस्कर समझते हैं। कैडेट पार्टी की पेत्रोग्राद शाखा के मंत्री ने मुझे बताया कि देश के आर्थिक जीवन को ठप करना क्रांति की साख मिटाने के आन्दोलन का ही एक भाग है। एक मित्र-राष्ट्र के कूटनीतिज्ञ ने, जिनका नाम प्रगट न करने के लिए मैं वचनबद्ध हूँ, इस बात की स्वयं अपनी जानकारी के आधार पर पुष्टि की। मुझे मालूम है कि ख़ारकोव के नज़दीक की कई कोयले की खानों में उनके मालिकों ने आग लगवा दी और उनमें पानी भरवा दिया, मास्को की कुछ सूती मिलों के इंजीनियर जाते जाते मशीनों को चौपट कर गये, रेल अधिकारी रेल-इंजनों को तहस-नहस करते रंगे हाथों मज़दूरों द्वारा पकड़े गये ...

धनाढ्य वर्गों का एक बड़ा भाग क्रांति की अपेक्षा, अस्थाई सरकार की भी अपेक्षा जर्मनों की जीत को अधिक श्रेयस्कर समझता था, और ऐसा कहने में भी न झिझकता था। जिस रूसी परिवार के साथ मैं रहता था, उसमें खाने की मेज़ पर बातचीत का विषय प्राय: निरपवाद रूप से यह होता–जर्मन आयेंगे और अपने साथ ''शान्ति और सुव्यवस्था'' लायेंगे ... मैंने एक शाम मास्को के एक व्यापारी के घर बिताई। चाय के वक़्त हमने मेज़ के चारों ओर बैठे ग्यारह आदमियों से पूछा, वे किसे बेहतर समझते हैं–''विल्हेम को या बोल्शेविकों को'', ग्यारह में से दस ने विल्हेम को चुना ...

सट्टेबाज़ों ने आम गड़बड़ी और अव्यवस्था का फ़ायदा उठा कर दौलतें बटोरीं और उन्हें अपनी रंगरलियों में या सरकारी अफ़सरों की मुट्ठियां गर्म करने में उड़ाया। अनाज और ईंधन को चोर गोदामों में जमा किया गया, या चोरी-छिपे देश से बाहर स्वीडन रवाना किया गया। उदाहरण के लिए, क्रांति के पहले चार महीनों में पेत्रोग्राद नगरपालिका के बड़े-बड़े गोदामों से अनाज के रिज़र्व स्टाक दिन-दहाड़े लूटे गये, और यह लूट यहां तक बढ़ी कि दो साल के लिए पर्याप्त अनाज का स्टाक एक महीना के लिए भी नगरवासियों का पेट भरने के लिए काफ़ी नहीं रह गया ...अस्थायी सरकार के अन्तिम खाद्य मंत्री की सरकारी रिपोर्ट के अनुसार कहवा व्लादीवोस्तोक में फ़ी पौंड दो रूबल के थोक भाव से खरीदा गया और उसी के लिए पेत्रोग्राद में उपभोक्ताओं ने 13 रूबल दिये। बड़े शहरों की सभी दुकानों में टनों अनाज और कपड़ा भरा पड़ा था, लेकिन उन्हें दौलतमन्द लोग ही खरीद सकते थे।

मुफ़स्सल के एक शहर में मेरी वाक़िफ़ीयत एक व्यापारी के परिवार से थी, जो अब सट्टेबाज़ या जैसा रूसी लोग कहते हैं, मारोछोर (लूटेरा, नरपिशाच) हो गया था। उसके तीन लड़के रिश्वत देकर फ़ौजी नौकरियों से निकल आये थे। एक अनाज की सट्टेबाज़ी करता था। दूसरा लेना नदी की खानों का उड़ाया हुआ सोना फ़िनलैण्ड के कुछ रहस्यमय ख़रीददारों के हाथ बेचता

था। तीसरे का एक चाकलेट के कारख़ाने में इतना बड़ा हिस्सा था कि वह कारख़ाना उसी के नियंत्रण में चलता था। वह अपना माल स्थानीय सहकारी समितियों को बेचता था–इस शर्त पर कि ये समितियां उसकी तमाम ज़रूरतों को पूरा करें, और इस प्रकार जब कि जन-साधारण अपने राशन-कार्डों पर आधा पाव काली डबल-रोटी पाते थे, उसके पास सफ़ेद डबल-रोटी, चीनी, चाय, मिस्री, मक्खन और केक के ढेर के ढेर थे ... फिर भी, जब मोर्चे पर सिपाही भूख, ठंड और थकावट से लाचार होकर लड़ न पाते, तो इस परिवार के लोग कितने गुस्से से चीखते, ''डरपोक! मुर्दादिल!'' और ''रूसी होने के लिए'' कितनी ''शर्मिन्दगी'' ... और जब आख़िरकार बोल्शेविकों ने चोर गोदामों में बहुत सा रसद-पानी जमा किया हुआ पाया और उसे ज़ब्त कर लिया, तो इन व्यापारियों की निगाह में वे कितने बड़े ''लूटेरे'' थे।

समाज की सतह पर सारी सड़ांध के नीचे पुराने ज़माने की तारीक ताक़तें, जो निकोलाई द्वितीय के पतन के समय से बदली न थी, पोशीदा तौर पर और बड़ी सरगर्मी के साथ काम कर रही थी। बदनाम ओखराना (राजनीतिक पुलिस) के एजेन्ट अभी भी काम कर रहे थे जार के लिए और जार के खिलाफ–जो भी उन्हें पैसा दे, वे उसके हाथों बिकने के लिए तैयार थे ..अंधेरे में यमदूत सभाइयों जैसे तरह तरह के रूपोश संगठन प्रतिक्रिया को किसी न किसी रूप में पुन:स्थापित करने की कोशिश में लगे हुए थे।

भ्रष्टाचार तथा वीभत्स अर्धसत्यों के इस वातावरण में एक स्पष्ट स्वर दिन-प्रतिदिन गूंजता रहता था, वह था बोल्शेविकों की बराबर गहरी होती हुई आवाज़ : ''समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में ! लाखों करोड़ों आम मज़दूरों, सिपाहियों, किसानों के प्रत्यक्ष प्रतिनिधियों के हाथ में। हमें जमीन चाहिए, रोटी चाहिए। इस बेमतलब लड़ाई का खात्मा होना चाहिए, गुप्त कूटनीति का, सट्टेबाज़ी का, ग़द्दारी का खात्मा होना चाहिए ...क्रांति ख़तरे में है ... और उसके साथ सारे संसार में जनता का ध्येय ख़तरे में है!''

सर्वहारा और पूंजीपति वर्ग के बीच, सोवियतों और सरकार के बीच जो संघर्ष शुरू मार्च के दिनों में छिड़ गया था, अब उसकी परिणति होने को थी। एक ही छलांग में मध्य युग से निकल बीसवीं सदी में प्रवेश कर रूस ने चकित-विमूढ़ संसार के सामने क्रांति की दो प्रणालियों – एक राजनीतिक और दूसरी सामाजिक – को सांघातिक संघर्ष की अवस्था में प्रगट किया।

इन तमाम महीनों की भुखमरी के बाद और भ्रम टूटने के बाद रूसी क्रांति की प्राणशक्ति की यह कैसी अभिव्यक्ति थी! पूंजीपति वर्ग को अपने रूस को ज़्यादा अच्छी तरह जानना चाहिए था। जल्द ही रूस में क्रांति की ''बीमारी'' का सिलसिला पूरी तेजी पर आने वाला था ...

हमने इतनी तेजी के साथ अपने को नये, अधिक गतिशील जीवन के अनुरूप ढाल लिया था कि पीछे मुड़कर देखने से लगता था कि नवम्बर विद्रोह के पहले रूस एक दूसरे ही युग में था, बेहद रूढ़िपंथी था। हम उसी तरीक़े से बदल गये थे, जैसे रूसी राजनीति समूची की समूची वामपंथी दिशा में ढुलक पड़ी थी, यहां तक कि कैडेटों को ''जनता के शत्रु'' कहकर गैर-क़ानूनी करार दिया गया, केरेन्स्की ''प्रतिक्रियाकारी'' बन गये और ''मध्यमार्गी'' समाजवादी नेता उनके अनुयायियों के लिए भी घोर प्रतिक्रियावादी बन गये और वीक्तोर चेर्नोव जैसे लोग, यहां तक कि मेक्सिम गोर्की तक, दक्षिणपंथी हो गये ...

लगभग बीच दिसम्बर, 1917 में कुछ समाजवादी-क्रान्तिकारी नेताओं ने ब्रिटिश राजदूत सर जॉर्ज ब्यूकनन से एक निजी मुलाक़ात की और उनसे बड़ी आजिज़ी से कहा कि वह किसी से उनके आने का जिक्र न करे, क्योंकि वे ''घोर दक्षिणपंथी'' समझे जाते थे।

''ज़रा सोचिये,'' सर जॉर्ज ने कहा। ''साल भर पहले मेरी सरकार ने मुझे हिदायत दी कि मैं यह देखते हुए कि मिल्युकोव कितना ख़तरनाक वामपंथी है उससे मुलाकात मंजूर न करूं!''

रूस में, खासकर पेत्रोग्राद में, सितम्बर और अक्तूबर से बुरे महीने और नहीं हैं। फीका, उदास, धुंधला आसमान, लम्बी होती जाती रातें, लगातार सराबोर कर देने वाली बारिश। राह चलते पैरों के नीचे लबालब, गहरी फिसलन भरी कीचड़, जो पैरों से चिपकती और जिसकी छाप भारी भारी बूट हर जगह डालते। नगरपालिका प्रशासन के बिल्कुल ठप हो जाने की वजह से हालत और भी बुरी हो गई थी। फ़िनलैण्ड की खाड़ी से तेज़, चुभती हुई नम हवायें बह रही थी और ठंडा कोहरा सड़कों में उमड़ा आ रहा था। रात में बचत के ख़्याल से और ज़ेप्लिनों के डर से भी सड़कों की बत्तियां बहुत कम जलाई जाती थीं–एक बत्ती यहां, तो एक वहां। लोगों के अपने घरों में बिजली छ: बजे शाम से आधी रात तक जलती रहती, जब कि मोमबत्तियां फ़ी मोमबत्ती 40 सेंट के हिसाब से बिकती और मिट्टी के तेल का तो दर्शन भी दुर्लभ था। तीसरे पहर तीन बजे से लेकर दूसरे दिन दस बजे तक अंधेरा छाया रहता। चोरियां बढ़ गई थी और मकानों में कसरत से सेंधें लगायी जा रही थीं। अपने मकानों में लोग भरी राइफ़लें हाथ में लेकर पूरी रात पारी पारी से पहरा देते। यह थी अस्थायी सरकार के तहत पेत्रोग्राद की हालत।

हफ़्ता-ब-हफ़्ता खाद्य की कमी होती जाती। डबल-रोटी का दैनिक राशन डेढ़ पौण्ड से एक पौण्ड हुआ, फिर तीन चौथाई, आधा और एक चौथाई ही रह गया। अंत में एक हफ़्ता बिना रोटी के ही निकल गया। जहां तक चीनी का सवाल है, आप महीने में दो पौण्ड की दर से उसे पाने के हक़दार थे–बशर्ते कि आप उसे पा सकें, ऐसा सौभाग्य कम ही प्राप्त होता था। चाकलेट के एक बार (डंडी) या बेज़ायका कैंण्डी के एक पौण्ड के लिए सात से दस रूबल तक कुछ भी, और एक डालर से कम तो किसी हालत में नहीं, देना पड़ता था। शहर के आधे बच्चों के लिए दूध था और आधों के लिए नहीं। अधिकांश होटलों और निजी घरों में महीनों तक दूध का दर्शन न होता। फलों के मौसम में फलों का यह हाल था कि सड़क के नुक्कड़ों पर सेब और नाशपाती सोने के मोल बिकते–एक सेब या नाशपाती एक रूबल में ...

दूध और डबल-रोटी के लिए, चीनी और तम्बाकू के लिए आपको ठंड और बारिश में घंटों लाइन में खड़ा होना पड़ता। रात भर की एक मीटिंग से लौटते हुए मैंने सवेरा होने से पहले ही ख़्वोस्त (पूंछ) को बनते हुए देखा है; अधिकांशत:, स्त्रियां, जिनमें कुछ गोद में बच्चे लिए भी होतीं, लाइन में खड़ी होतीं ...कार्लाइल ने

(शेष पृष्ठ 6 पर)

... महान नवम्बर क्रान्ति की जमीन

(पृष्ठ 5 का शेष)

अपनी पुस्तक 'फ़्रांसीसी क्रांति' में कहा है कि फ़्रांसीसी जनता दूसरे सभी जनों की तुलना में इस माने में विशिष्ट है कि वह लाइन में खड़ी होने की क्षमता रखती है। रूस इस दस्तूर का आदी हो चुका था, जो 1915 में ही ''महामान्य'' निकोलाई के शासनकाल में शुरू हुआ, और तब से लेकर 1917 की गर्मियों तक बीच बीच में पूरी तरह स्थापित हो गया। ज़रा सोचिये, रूस की कड़ाके की सर्दी में लोग फटे-चीथड़े पहने पेत्रोग्राद की सड़कों पर, जिन पर मालूम होता था कि सफ़ेद टीन की चादरें बिछी हुई हैं, दिन दिन भर खड़े रह जाते थे! मैंने रोटी के लिए लगी हुई लाइनों में खड़े होकर सुना कि किस तरह उनके बीच से रूसी भीड़ की अद्भुत सद्भावनापूण प्रकृति पर हावी होकर असंतोष का कटु, तीक्ष्ण स्वर रह रह कर फूट पड़ता था ...

कहने की जरूरत नहीं कि सभी थियेटरों में इतवार समेत हर रात शो होते। मारिईन्स्की थियेटर में करसाविना ने एक नये बैले में अभिनय किया, नृत्य-प्रेमी तमाम रूसी उसे देखने के लिए उमड़ पड़े। शल्यापिन का गायन उन्हीं दिनों चल रहा था। अलेक्सान्द्रीन्स्की थियेटर में अलेक्सेई टाल्सटॉय की कृति 'इवान भयानक की मृत्यु' का मैयरखोल्द द्वारा प्रस्तुत नाट्य रूपांतर फिर से खेला जा रहा था। मुझे याद है, जब यह नाटक चल रहा था, शाही पेज स्कूल का एक छात्र अपनी वर्दी पहने हुए नाटक के अंकों के बीच सूने शाही बाक्स, जिसके राज्य-चिन्ह मिटा दिये गये थे, की ओर मुंह करके बाक़ायदा सलाम बजाने की मुद्रा में खड़ा हुआ ... ''क्रिवोये ज़ेरकालो'' (तिरछा आईना) नामक कम्पनी ने श्नीत्सलेर की कृति 'रीगेन' का सुन्दर अभिनय प्रस्तुत किया।

यद्यपि हरमिताज और दूसरी चित्रशालाएं पेत्रोग्राद से हटा कर मास्को भेज दी गई थीं, चित्रों की प्रदर्शनियां हर सप्ताह होती रहती थीं। बुद्धिजीवी परिवारों की महिलाएं झुंड की झुंड साहित्य, कला तथा सुगम दर्शन के बारे में भाषण सुनने जाती। खास तौर पर थियोसोफिस्टों की सरगर्मियां बड़े जोरों पर थीं, और मौक्ष सेना (सैल्वेशन आर्मी) ने, जिसे इतिहास में पहली बार रूस में प्रवेश करने दिया गया था, दीवालों पर अपने बेशुमार पर्चे चिपकाये थे, जिनमें दिव्य-संदेश सभाओं की सूचनाएं होतीं। रूसी दर्शकों के लिए ये सभाएं विनोद की और आश्चर्य की भी वस्तु थीं ...

जैसा ऐसे वक़्त हमेशा होता है, नगर का लीक से बंधा तुच्छ जीवन क्रांति की यथासम्भव अवहेलना करता हुआ चलता जा रहा था। कवि अपनी तुकबंदिया करते, लेकिन उनमें क्रांति का जिक्र भूले भी न होता, यथार्थवादी चित्रकार मध्ययुगीन रूसी इतिहास के दृश्यों को आंकते, कुछ भी आंकते, लेकिन वे क्रांति की तस्वीर हरगिज़ न देते। प्रान्तों से युवा महिलायें फ़्रांसीसी भाषा और गायन सीखने के लिए राजधानी में आतीं और नौजवान, हसीन और खुशमिज़ाज अफ़सर अपने सुनहली गोटे वाले सुर्ख बश्लीक पहने और अपनी नक़्क़ासी की हुई काकेशियाई तलवारें बांधे होटलों के प्रकोष्ठों में घूमते रहते। छोटे-मोटे अफ़सरों के घरों की महिलायें तीसरे पहर एक-दूसरी के साथ बैठ कर चाय पीतीं, हर महिला अपने दस्तानाबंद हाथ में अपने साथ अपनी सोने या चांदी की या रत्नजड़ित शर्करा मंजूषा और आधी डबल-रोटी लेकर चलती और वे यह मनाती कि जार वापिस आ जाये या जर्मन आ जायें, या कुछ ऐसा हो कि नौकरों की समस्या सुलझ जाये ... एक दिन तीसरे पहर मेरे एक दोस्त की लड़की घर लौटी, तो वह आपे से बाहर हो रही थी, क्योंकि उसे ट्राम-गाड़ी की महिला कंडक्टर ने ''कॉमरेड'' कह कर पुकारा था!

उनके चारों ओर रूस की धरती प्रसव वेदना से छटपटा रही थी और एक नये संसार को जन्म दे रही थी। जिन नौकरों के साथ कुत्तों जैसा सलूक किया जाता था और जिनके सामने चन्द ठीकरे फेंक दिये जाते थे, वे अब खुदमुख़्तार हो रहे थ। एक जोड़ी जूते की क़ीमत सौ रूबल से ज़्यादा थी और चूंकि मासिक तनख़ाह औसतन करीब 35 रूबल थी, नौकर लाइनों में खड़े होकर एड़ियां रगड़ने या जूते घिसने से इनकार कर देते। इतना ही नहीं, नये रूस में हर मर्द और औरत को वोट देने का हक़ हासिल था; मज़दूरों के अख़बार निकल रहे थे, जो नयी और चौंका देने वाली बातें कहते थो। और फिर सोवियतें थीं और यूनियनें थीं। इज़्वोज़्चिकों (गाड़ीवानों) की अपनी यूनियन थी; उनके प्रतिनिधि भी सोवियत में थे। होटल कर्मचारी और वेटर संगठित थे और वे बख़्शिश लेने से इनकार कर देते। रेस्तरां की दीवालों पर नोटिसें चिपका देते, जिनमें लिखा होता : ''यहां बख़्शिश नहीं ली जाती'', या ''अगर कोई आदमी वेटरी करके अपनी रोटी कमाता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि आप उसे बख़्शिश देकर उसकी तौहीन करें''।

मोर्चे पर सिपाही अफ़सरों के साथ अपनी लड़ाई लड़ रहे थे और अपनी समितियों द्वारा स्वशासन की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। कारख़ानों के अन्दर वे बेजोड़ रूसी संस्थाएं–कारख़ाना समितियां –पुरानी व्यवस्था से संघर्ष के दौरान अनुभव, शक्ति और ऐतिहासिक मिशन की समझ अर्जित कर रही थीं। समूचा रूस पढ़ना-लिखना सीख रहा था, वह राजनीति, अर्थशास्त्र, इतिहास पढ़े जा रहा था, क्योंकि लोगों की ज्ञान-पिपासा जाग गयी थी . .. हर बड़े शहर में, अधिकांश छोटे शहरों में भी, मोर्चे पर हर राजनीतिक गुट का अपना अख़बार निकलता था–कभी-कभी तो एक नहीं, कई बार अख़बार निकलते थे। लाखों पैम्फ़लेट हजारों संगठनों द्वारा बांटे जा रहे थे, और सेनाओं में, गांवों में, कारख़ानों में, सड़कों-गलियों तक में उनकी जैसे झड़ी लगी हुई थी। शिक्षा की लालसा, जो इतने दिनों दबाई गई थी, क्रान्ति के साथ सहसा प्रज्वलित हो उठी और अत्यंत प्रबल तथा उग्र रूप में प्रगट हुई। अकेले स्मोल्नी संस्थान से पहले छः महीनों में हर रोज टनों साहित्य देश के कोने-कोने में फैल गया। जिस तरह गर्म तपता हुआ बालू पानी को सोखता है और फिर भी अतृप्त रहता है, उसी तरह रूस यह सारी पठन-सामग्री चट कर गया, और फिर भी उसकी प्यास नहीं बुझी। और यह सामग्री क़िस्सा-कहानी न थी, गढ़ा हुआ इतिहास नहीं थी, मिलावटी मज़हब नहीं थी और न ही वह सस्ता, दो कौड़ी का बिगाड़ने वाला कथा-साहित्य थी। यह पठन-सामग्री थी–सामाजिक और आर्थिक सिद्धांत, दर्शन, टाल्स्टाय, गागोल और गोर्की की कृतियां ...

और फिर वह सारी बातचीत और बहस, जिसके सामने कार्लाइल का ''फ़्रांसीसी वाक् प्रवाह'' महज एक पतली सी धारा था, थियेटरों, सर्कसों, स्कूलों, क्लबों, सोवियतों के सभा-कक्षों, यूनियनों के सदर दफ्तरों, बारिकों में लेक्चर, वाद-विवाद, भाषण ... मोर्चे की खाइयों में, गांवों के चौकों में, कारख़ानों में सभाएं ... वह कितना अद्भुत दृश्य होता, जब पुतीलोव्स्की ज़ावोद (पुतीलोव कारख़ाना) के 40,000 मज़दूर सामाजिक-जनवादियों, समाजवादी-क्रान्तिकारियों, अराजकतावादियों–जिस किसी को, जो कुछ भी कहना हो, उसे सुनने के लिए, जब तक वह बोलता जाये, तब तक सुनने के लिए निकल पड़ते। पेत्रोग्राद में, समूचे रूस में महीनों तक सड़क और गली का हर नुक्कड़ सार्वजनिक भाषण का एक मंच बना हुआ था। रेल-गाड़ियों में, ट्राम-गाड़ियों में, सभी जगहों पर बहसें हमेशा अपने आप छिड़ जातीं ...

और फिर अखिल रूसी सम्मेलन और कांग्रेसें, जिनमें दो प्रायद्वीपों के लोग इकट्ठे होते–सोवियतों के, सहकारी समितियों के ज़ेम्सत्वोओं, जातियों, पादरियों, किसानों, राजीतिक पार्टियों के सम्मेलन, जनवादी सम्मेलन, मास्को राजकीय सम्मेलन, रूसी जनतंत्र की परिषद् ... पेत्रोग्राद में हमेशा तीन-चार सम्मेलन एक साथ ही चलते रहते। हर सभा में भाषणकर्ताओं का वक़्त बांध देने की कोशिश बेकार जाती, हर आदमी इसके लिए आजाद था कि उसके मन में जो भी विचार हो, उसे वह बेधड़क जाहिर करे।

हम रीगा के पीछे बारहवीं सेना के मोर्चे पर गये, जहां फटेहाल और नंगे पैर आदमी, जिनकी हड्डियां निकल आयी थीं, घोर निराशाजनक खाइयों की कीचड़ में घुल रहे थे। जब उन्होंने हमें देखा, वे उठ खड़े हुए–उनके चेहरे ठिठुरे हुए थे और उनके बदन की नीली जिल्द फटे हुए कपड़ों के बीच से झलक रही थी। उन्होंने बड़े चाव से पूछा, ''क्या आप कुछ पढ़ने के लिए लाये हैं?''

परिवर्तन के कितने ही बाह्य लक्षण देखे जा सकते थे तो क्या अलेक्सान्द्रीन्स्की थियेटर के सामने महान येकातेरीना की मूर्ति अपने हाथ में एक छोटा सा लाल झण्डा लिये थी, तो क्या, दूसरे झण्डे, जिनका रंग कुछ उड़ा हुआ था, सभी भवनों के ऊपर फहरा रहे थे, शाही निशान और उकाब या तो फाड़ डाले गये थे, या उन पर कपड़ा डाल दिया गया था, और डरावने गोरोदोवोई (नगर पुलिस) की जगह अब नर्मी से पेश आने वाली निहत्थी मिलिशिया सड़कों पर गश्त लगा रही थी, तो भी क्या, इन सब के बावजूद गुज़रे ज़माने की बहुत सी अजीबोग़रीब अलामतें अभी भी मौजूद थीं।

उदाहरण के लिए, पीटर महान का 'ताबेल ओ रान्गाख़'–दरजावार तरतीब–जिसको उन्होंने सख्ती के साथ रूस पर लागू किया था, अभी भी चल रही थी। स्कूली लड़कों समेत प्रायः सभी लोग अपनी मुक़र्रर वर्दियां पहनते थे, जिनके बटनों और कंधे की पट्टियों पर शाही निशान अंकित होते थे तीसरे पहर क़रीब पांच बजे सड़कें ढलती उम्र के कुछ सहमे हुए वर्दीपोश साहबानों से भरी होतीं, जो मंत्रालयों या सरकारी संस्थानों की बड़ी बड़ी बारिकनुमा इमारतों में काम करने के बाद पोर्टफोलियो लिए रास्ते भर शायद यह हिसाब लगाते घर जाते होते कि उनके ऊपर के कितने अफ़सरों की मृत्यु होने से वे तरक़्क़ी पाकर कालेजिएट असेसर या प्रिवी कौन्सिलर के आकांक्षित पद (दर्जे) को प्राप्त कर सकेंगे, ताकि अच्छी ख़ासी पेन्शन पर या शायद सेंट ऐन का पदक पाकर रिटायर होने की सम्भावना हो सके...

कहा जाता है कि जब क्रांति पूरे बाढ़ पर थी, तब एक दिन सीनेटर सोकोलोव नागरिक लिबास पहने सीनेट की एक खास मीटिंग में भाग लेने के लिए आये, लेकिन उन्हें भीतर नहीं घुसने दिया गया, क्योंकि उन्होंने ज़ारशाही सेवा की नियत वर्दी नहीं पहन रखी थी!

एक पूरे राष्ट्र की हलचल और विघटन की इसी पृष्ठभूमि में ही रूस की जागृत और उठ खड़ी हुई जनता का शानदार जुलूस निकला ...

दिल्ली में डब्ल्यूटीओ का विरोध

शिक्षा के हित को बुलंद करने के लिए फेडडुटा (फेडरेशन ऑफ सेन्ट्रल यूनिवर्सिटिज टीचर्स एसोसियेशन) और एआईफुक्टो (आल इण्डिया फेडरेशन ऑफ यूनिवर्सिटी एण्ड कॉलेज टीचर्स ऑर्गेनाइजेशन) की ओर से 14 अक्तूबर को मावलंकर सभागार में एक राष्ट्रीय असेम्बली का आयोजन किया गया। शिक्षा जैसी सेवा को गैटस के दायरे में लाने पर लक्षित डब्ल्यूटीओ के आगामी नरोबी सम्मेलन के खिलाफ सैकड़ों छात्र व शिक्षक इस कार्यक्रम में जुटे।

अन्य वक्ताओं के अलावा, एआईएसईसी (आल इण्डिया सेव एज्युकेशन कमेटी) के अध्यक्ष प्रो. नरेन्द्र शर्मा और एआईडीएसओ (ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स ऑर्गेनाइजेशन) के उपाध्यक्ष कॉमरेड भास्करानंद ने भी सभा को सम्बोधित किया।

डब्ल्यूटीओ के खिलाफ दिल्ली में राष्ट्रीय असेम्बली को सम्बोधित करते हुए प्रो. नरेन्द्र शर्मा

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण ...

(पृष्ठ 4 का शेष)

अपने मन में विचार के सभी पूर्ववर्ती सम्बन्ध-सूत्रों को पुनर्व्यवस्थित किया और उनमें एक नया सम्बन्ध-सूत्र खोज निकाला, जिसे हम गुरुत्वाकर्षण का नियम कहते हैं।'' विवेकानंद के इस विश्लेषण के अनुसार, किसी ने भी दस हजार साल पहले गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत खोज लिया होता। इसका मतलब है गैलिलियो, न्यूटन, आइन्स्टीन, प्लांक, हेजेनबर्ग और साथ ही जगदीश चंद्र बसु, प्रफुल्ल चंद्र राय, सत्येन बोस, मेघनाथ साहा, सीवी रमन या रामानुजम के तमाम महत्वपूर्ण वैज्ञानिक आविष्कार या आधुनिक लोकतंत्र की धारणा, मानवतावादी चिंतन, संसदीय जनतंत्र और समाजवाद की धारणा प्राचीन काल में या दास-दासप्रभु समाज में भी हो सकती थी या इनकी थ्यूरी प्रस्तुत की जा सकती थी। सुकरात से लेकर प्लेटो, ईसा मसीह या शंकराचार्य तक-कोई भी ये खोज कर सकता था। केवल 'सेब के गिरने' जैसे एक प्रेरक की जरूरत थी। जरा सोचिये, क्या यह विज्ञान के अनुसार या तर्कसंगत बात है? वे विश्वास करते थे कि हर चीज में, हर इन्सान में आत्मा या परमात्मा या ब्रह्मा बसते हैं। और चूंकि ब्रह्मा परम सत्य है, शाश्वत है, अनश्वर है और यह परम सत्य अतिप्राचीन काल से हर किसी में है, इसलिए कोई नया सत्य नहीं खोजा जा सकता।

दूसरी तरफ, देखिये कैसे एक असाधारण लोकोपकारी, विवेकानंद लाखों-लाख भूखे लोगों की हाहाकार से द्रवित होकर आक्रोश से भरी आवाज में अमीरों को कोस रहे हैं : ''जब तक करोड़ों लोग भूखे और अज्ञानता में जीवन बीताते रहेंगे, तब तक मैं प्रत्येक उस आदमी को विश्वासघातक समझूँगा, जो उनके खर्च पर शिक्षित हुआ है, परन्तु उनकी दशा पर तनिक भी ध्यान नहीं देता। ... जब तक बीस करोड़ भारतीय भूखे जानवरों जैसा जीवन बीतायेंगे, तब तक मै उन अमीरों को पापी दुर्जन कहूँगा, जिन्होंने इन गरीबों को निचोड़ कर धन कमाया है और अब ठाट-बाट से अकड़ कर चलते हैं'' उन्होंने यह भी कहा था : ''जलते हुए हिन्दुस्तान के लाखों दु:खार्त भूखे लोग सूखे गले से रोटी के लिए चिल्ला रहे हैं। वे हम से रोटी मांगते हैं और हम उन्हें देते हैं पत्थर। क्षुधातुरों को धर्म का उपदेश देना उनका अपमान करना है, भूखों को दर्शन(अध्यात्म) सिखाना उनका अपमान करना है।'' असंख्य भूखों को देखकर दर्द से बेचैन होकर उन्होंने ऐसी बहुत सारी बातें कही थी। साथ ही, वेदांत में पक्का यकीन करने वाले विवेकानन्द ने 1897 में लाहौर में दिये अपने भाषण में कहा था : ''आप इसे चाहे जानते हो या नहीं जानते, आप हाथों से काम करते हो, पैरों से आप चलते हो, आप महल में आनंद करने वाले राजा हैं, गली में वह दयनीय अस्तित्व में जी रहे भिखारी हो; आप चाहे ज्ञानी हो और अज्ञानी हों, आप उस इन्सान में हों जो कमजोर है, और उसमें हो जो बलवान है; इसे जानो और हमदर्द बनो। और यही वजह है कि हमें दूसरों को दु:ख नहीं पहुँचाना चाहिए। यही वजह है कि मुझे भूखा मरना पड़े तो मैं इस बात की परवाह नहीं करता क्योंकि उस समय करोड़ों मुँह खाना खा रहे होंगे, और वे मेरे ही होंगे। इसलिए मुझे इस बात की परवाह नहीं होनी चाहिए कि मेरा क्या होगा क्यों कि सारा संसार मेरा है और मैं ही हूँ। ... इसी में नैतिकता है। यहीं पर, वेदांत में ही नैतिकता की व्याख्या की गई है।'' इस तरह से वेदांती विवेकानन्द ने लोकोपकारी विवेकानन्द की स्वविरोध कर दिया। अद्वैत वेदांत में विश्वास करने वाले के तौर पर, उन्होंने सोचा कि सर्वोच्च, ब्रह्मा ही सत्य है और वह ब्रह्मा हरेक में बसता है। इसलिए, उनके इस विश्वास के अनुसार , राजा और रंक में, पढ़े-लिखे और अनपढ़ में, भूखे और महाभोज का आनंद लेने वाले में कोई फर्क नहीं है। हर कोई एक ही और अभिन्न है-उसी ब्रह्मा की अभिव्यक्ति है। इसलिए, किसी को कोई समस्या नहीं हो सकती। कितनी स्वविरोधी बात है! राष्ट्रवादी लोकोपकारी विवेकानंद समाज में व्याप्त दमन-उत्पीड़न और वंचन के विरोध में शेर की तरह दहाड़ रहे थे जबकि वेदांती विचारों में उलझे हुए एक दूसरे विवेकानंद कह रहे थे कि 'भौतिक जगत मिथ्या है, केवल ब्रह्मा ही सत्य है।' इसलिए वास्तव में यहां कोई दुख और मानसिक क्लेश नहीं है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में ऐसे महापुरुष का कितना दुखद अंजाम हुआ!

बढ़ती महंगाई और साम्प्रदायिकता के खिलाफ धरना

मुरादाबाद में धरना देते हुए एआईवाईओ के कार्यकर्ता

मुरादाबाद, उ.प्र. : बढ़ती महंगाई और साम्प्रदायिकता के खिलाफ 16 अक्तूबर को ऑल इण्डिया डीवाईओ की जिला कमेटी की ओर से जिला अधिकारी, मुरादाबाद के कार्यालय के सामने धरना दिया गया। धरने की अध्यक्षता संगठन के जिलाध्यक्ष कॉ. विनोद विग एडवोकेट ने की और संचालन जिला सचिव मौ. गोरी ने किया। धरने को मुख्य वक्ता के रूप में संगठन के प्रदेशाध्यक्ष कॉ. हरिकिशोर सिंह ने सम्बोधित किया। धरने/प्रदर्शन के बाद महामहिम राष्ट्रपति भारत सरकार व माननीय मुख्यमंत्री उ.प्र. सरकार के नाम ज्ञापन सौंपे गये। ज्ञापन में ये 5 सूत्री मांगें पेश की गई : महंगाई पर तत्काल रोक लगाई जाये और दालों, चीनी, प्याज आदि तमाम खाद्य पदार्थों की सस्ती दरों पर आपूर्ति सरकार द्वारा सुनिश्चित की जाये, दादरी और मैनपुरी काण्डों के साजिशकर्ताओं सहित सभी दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाही की जाये, टीवी, मीडिया, साहित्य, शिक्षा, शिक्षण संस्थाओं अथवा भाषणों के द्वारा साम्प्रदायिक विचारों का प्रचार-प्रसार बंद किया जाये, अंतर्जातीय व अन्तर्धर्मीय विवाहों को प्रोत्साहन दिया जाये, सरकारी कार्यक्रमों में नेताओं व सरकार द्वारा धार्मिक अनुष्ठानों व रीति-रिवाजों के पालन पर रोक लगे।

धरने पर बैठे लोगों को सम्बोधित करते हुए कॉ. हरकिशोर सिंह ने कहा कि हमारे संगठन का एक प्रतिनिधिमण्डल 11 अक्तूबर को दादरी के बिसहड़ा गांव गया था जिसने गांव में मौजूद पुलिस अधिकारियों, जिला प्रशासन के उच्च अधिकारियों से लेकर गांव व क्षेत्र के बहुत सारे लोगों से बातचीत की। साम्प्रदायिक हिंसा के शिकार हुए मृतक अखलाख का परिवार गांव में मौजूद न होने के कारण प्रतिनिधिमण्डल उनसे नहीं मिल सका। उन्होंने बताया कि सच्चाई यह है कि कुछ साजिशकर्ताओं ने सुनियोजित साजिश के तहत भोले-भाले ग्रामीणों को भड़का कर अपने राजनैतिक लाभ के लिए यह दंगा कराया है। इसमें बीजेपी, आरएसएस जैसे संगठन शामिल हैं जिनका मकसद साम्प्रदायिक उन्माद फैला कर मिशन 2017 को सफल करना है। उन्होंने कहा कि खेद की बात यह है कि प्रदेश सरकार भी न केवल इन दंगों को रोकने में नाकाम रही बल्कि वह भी मोदी सरकार से मिलीभगत में शामिल है। उन्होंने कहा कि अखलाख परिवार निहायत शरीफ और गरीब है जो बढ़ईगिरी का काम करता है। उसकी हत्या से क्षेत्र में भय का वातावरण बना हुआ है। महंगाई और बेरोजगारी बढ़ रही है। जमाखोरों व कालाबाजारियों को सरकार खुली छूट दे रही है। इससे ध्यान दूसरी ओर फेरने के लिए साम्प्रदायिकता फैलाई जा रही है। उन्होंने इसके खिलाफ जनवादी व धर्मनिरपेक्ष जोरदार आन्दोलन और गतिविधियां तेज करने का आह्वान लोगों से किया।

धरने को विनोद विग, मौ. गौरी, राजेन्द्र सिंह, रूबी खान, कमलेश चाहल, फैज खान, गंभीर सिंह, अनवर खान, असलूब नाइक, श्यामसुन्दर, राकेश शर्मा, सौरभ विग, धर्मपाल सिंह एडवोकेट ने भी सम्बोधित किया।

इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि उनकी सबसे अच्छी शिष्या, सिस्टर निवेदिता ने रामकृष्ण मिशन से अपना मेलजोल तोड़ कर बंगाल में शुरूआती दौर के क्रान्तिकारी आन्दोलन में शिरकत की थी और इसकी सक्रिय मदद की थी। उनके प्रिय छोटे भाई डा. भूपेन्द्रनाथ दत्ता जो विवेकानंद का बड़ा आदर करते थे, उन्होंने भी रामकृष्ण मिशन से अपने आपको नहीं जोड़ा बल्कि क्रान्तिकारी आन्दोलन में शामिल हुए और बाद में मार्क्सवाद को स्वीकार किया। एक और तथ्य भी उल्लेखनीय है। आजादी आन्दोलन के एक बहुत ही सम्माननीय क्रान्तिकारी नेता, हेमचन्द्र घोष ने अपनी आत्मकथा में लिखा था कि जब वे सीनियर स्कूल के छात्र थे, वे दूसरे कुछ छात्रों के ग्रुप के साथ अविभाजित बंगाल के ढाका शहर में विवेकानंद से मिले थे और धार्मिक आन्दोलन में शामिल होने की इच्छा जताई थी। विवेकानंद ने उन्को फटकार लगाई थी और यह टिप्पणी की थी कि विदेशी ताकत द्वारा शासित देश में एकमात्र धर्म होता है आजादी के लिए लड़ना। इस तरह, विवेकानंद ने बहुत सारे नौजवानों में देशभक्ति की भावना जगाई थी। इस बात का भी खारिज नहीं किया जा सकता कि अगर वे कुछ साल और जिन्दा रहे होते, तो शायद वे बंगाल का विभाजन करने की लार्ड कर्जन की घिनौनी स्कीम के खिलाफ संघर्ष के पायनियर होते। बहुत से शुरूआती क्रान्तिकारी विवेकानंद से प्रेरित हुए थे लेकिन गीता और वेदांत हाथों में लिये हुए। इस तरह भारतीय राष्ट्रवाद हिन्दू धर्मोन्मुखिता के साथ विकसित हुआ जिसे गाँधीजी ने अहिंसा की अपनी धारणा से और भी मजबूती दी।

यह खबर है कि चारों तरफ अत्यंत दुखदायी परिस्थिति को देख कर और अपना सपना साकार न होने पर गहरा व्यथित होकर वे अपनी असामयिक मृत्यु से तत्काल पहले बड़ा भारी अफसोस जाहिर किया करते थे। अगर वे विद्यासागर के विचारों को लेकर चले होते और उस लाइन पर संघर्ष किये होते, तो भारत को और भी महान विवेकानंद मिला होता। देश की स्थिति कुछ और ही होती। विवेकानंद को अत्यंत मान-सम्मान देते हुए, मैं सज्जनतापूर्वक पूछना चाहता हूँ कि क्या उनके विचारों के अनुसरण से देश की समस्याएं हल होंगी?

(शेष अगले अंक में)

बिजली दरों में वृद्धि ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

के राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड रामफल, सीपीआईएम नेत्री राजकुमारी दहिया, सीपीआई के धर्मपाल, सीपीआई(एमएल) के कमल सिंह को लेकर बने अध्यक्ष मण्डल ने की। वहां से शक्ति भवन तक जुलूस निकाला।

शक्ति भवन पर प्रदर्शनकारियों को वाम दलों के नेताओं ने सम्बोधित किया। चैयरमैन हरियाणा पावर यूटिलिटज की अनुपस्थिति में अन्य अधिकारी को ज्ञापन सौंपा गया। फ्यूल सरचार्ज समेत बिजली के बढ़े हुए रेट वापिस लेने और पुरानी स्लैब प्रणाली बहाल करने, अप्रैल से लागू किए गए नए रेट के एरियर रद्द करने, 23 सब डिविजनों को ठेके पर देने का निर्णय वापस लेने, 2 एकड़ तक की जमीनों वाले किसानों को टयूबवैल कनैक्शन न देने की शर्त हटाने, निगम बनाने की नीति की समीक्षा करते हुए निजीकरण और ठेकेदारी की प्रक्रिया को रोका जाने, बिजली निगमों का ऑडिट किसी स्वतंत्र जांच ऐजेन्सी से करवाया जाने तथा उसके अनुसार रेट घटाए जाने, प्रशासनिक खर्चों में कटौती करने और निगमों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर सख्ती से रोक लगाने, बड़े उद्योगों व कॉमर्शियल प्रतिष्ठानों में बिजली चोरी रोकी जाने, बड़े अधिकारियों और सरकारी विभागों के बकाया बिलों का समयबद्ध भुगतान करवाया जाने, निजी कम्पनियों को फायदा पंहुचाने की नजर से सरकारी बिजली प्लांटों को बंद करके निजी क्षेत्र से बिजली खरीदने की नीति गलत की समीक्षा की जाने तथा प्लांटों को चालू करके बिजली उत्पादन में आत्मनिर्भरता बनाई जाने की मांग ज्ञापन में की गई। सभा को बी.एस. चट्ठा, कवलजीत, हरपाल सिंह व राजेन्द्र सिह ने भी सबोधित किया।। बिजली सेवा के निजीकरण और निजी हाथों में सौंपने के लिए 23 सब-डिवीजनों के टेण्डर छोड़े जाने का विरोध कर रहे कर्मचारियों के आन्दोलन के समर्थन में हुई सभा को भी वामदलों के नेताओं ने सम्बोधित किया।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing : 5 November, 2015
सर्वहारा दृष्टिकोण
7 नवबर, 2015

साहित्य अभियान को मिला लोगों से जबरदस्त रेस्पोन्स

पूरे पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा के दौरान लगायी गई लगभग 700 बुक स्टालों पर 20 लाख से अधिक का पार्टी साहित्य बिका जिसमें कॉमरेड घोष की रचनाएं भी थी। गौरतलब बात यह है कि अन्य वाम दलों के बहुत सारे कार्यकर्ता के साथ-साथ विशाल संख्या में वामपंथी विचारों के लोगों ने हमारी पार्टी के साहित्य का संग्रह किया और भविष्य में उनसे सम्पर्क बनाने के लिए अपना नाम-पता भी छोड़ कर गये।

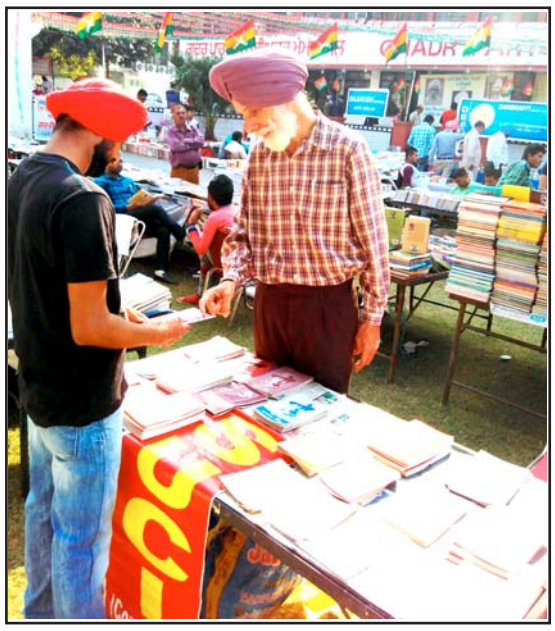

पंजाब के जलन्धर में 31 अक्तूबर व 1 नवम्बर को गदरी बाबाओं के मेले के मौके पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) द्वारा साहित्य बिक्री वास्ते लगाई गई बुक स्टाल

अल्पसंख्यकों व दलितों पर हो रहे हमलों का विरोध

रोहतक : हरियाणा में बल्लभगढ़ के सनपेड़ गांव में एक दलित परिवार को कथित तौर पर रंजिशन जिन्दा जला के मार देने की जघन्यतम घटना की एसयूसीआई (सी) ने कड़ी भर्त्सना की जिसमें दो मासूम बच्चों की मौत हो गई और मां-बाप झुलस गये। पार्टी के हरियाणा राज्य सचिव कॉ. सत्यवान ने 21 अक्तूबर को जारी बयान में कहा कि इस घटना में संलिप्त अपराधियों को जल्द से से गिरफ्तार कर सख्त सजा दिलाने और ऐसी अमानवीय बर्बर घटनाओं की पुनरावृति पर रोक लगाने के लिए ठोस एवं कारगर कदम उठाने की मांग की। उन्होंने कहा राज्य की खट्टर सरकार अपने नागरिकों को भयमुक्त सुरक्षित एवं सम्मानजनक जीवन प्रदान करने में नकारा साबित हुई है। पिछले दिनों बल्लभगढ़ के एक गांव में अल्पसंख्यक परिवारों पर बेवजह हमला किया गया था और आगजनी कर उनकी घर-सम्पत्ति जला दी गई थी। खुद मुख्यमंत्री के अपने गांव में भी अवांछित घटनाएं घटी थी। जाहिर है कि खट्टर सरकार की प्राथमिकताओं में गरीबों, दलितों व अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान करना शामिल नहीं है जो सरकार का नैतिक व वैधानिक दायित्व है। एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) ने सभी धर्मों व जातियों के लोगों से एकजुट होकर इसके लिए भाजपा सरकार पर दबाव बनाने का आह्वान किया।

देश भर में साम्प्रदायिकता-विरोधी जोरदार आन्दोलन गठित करने के लिए

कॉमरेड प्रभाष घोष ने लिखा पांच वाम दलों को पत्र

प्रेषित
महासचिव, सीपीआई(एम), सीपीआई, आरएसपी, फारवर्ड ब्लाक,
सीपीआई(एमएल)-लिबरेशन,

15 अक्तूबर, 2015

प्रिय कॉमरेड,

खौफनाक दादरी हत्याकाण्ड, डा. दाभोलकर, गोविन्द पनसारे व डा. कलबुर्गी जैसे जाने-माने तर्कशीलों के कत्ल, दूसरे तर्कशीलों को जान से मारने की लगातार मिल रही धमकी, पाकिस्तानी गायक गुलाम अली के गजल गायन तयशुदा कार्यक्रम को जबरन रद्द कराना, शिक्षा-संस्कृति के भगवाकरण के बढ़ते प्रयास दर्शाते हैं कि किस तरह हिन्दू साम्प्रदायिक आरएसएस-बीजेपी-शिव सेना परिवार साम्प्रदायिक तनाव से माहौल को गर्माने, विभिन्न धार्मिक-वंशमूल के सम्प्रदायों के बीच फूट डालने, धर्मान्धता व साम्प्रदायिक आग के शोले भड़काने, अकादमियों को निस्सार करने, पिछड़े पुनरुत्थानवादी अन्धविश्वास भरे विचारों और रूढ़िवाद को बढ़ावा देने, समाज के धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने को तहस-नहस कर डालने और तार्किक विचारों व वैज्ञानिक चिंतन प्रक्रिया को कुन्द करने ताण्डव मचा रहे हैं ताकि देश का आगे और फासीवादीकरण किया जा सके। यह अनिष्टकारी लक्षण है और इसकी तुरंत रोकथाम की कार्रवाई करने की जरूरत है।

हमारा दृढ़ मत है कि अगर वामपंथी पार्टियां मिलकर निचले स्तर से साम्प्रदायिकता-विरोधी एक संगठित जोरदार आन्दोलन छेड़ दें तो इस खतरे को रोका जा सकता है। इसलिए, हमारा सुझाव है कि आन्दोलन की रूपरेखा तैयार करने के लिए आपकी और हमारी पार्टी सहित छह वामपंथी पार्टियों की एक बैठक दिल्ली में तुरंत बुलाई जाये जो आन्दोलन यथासम्भव जल्द से जल्द छेड़ा जाए।

शुभेच्छा सहित

आपका
(प्रभाष घोष)

यूजीसी की गाइडलाइनों के विरोध में प्रदर्शन

दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रदर्शन करते हुए एआईडीएसओ कार्यकर्ता

दिल्ली : 20 अक्तूबर को एआईडीएसओ की दिल्ली राज्य कमेटी के बैनर तले कैम्पस के अन्दर और बाहर के उच्च शिक्षा के संस्थानों में छात्रों की सुरक्षा पर आये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की गाइडलाइनों और शिक्षा को गैट्स के दायरे में लाने की दृष्टि से होने जा रही है विश्व व्यापार संगठन की बैठक, सीबीसीएस, रूसा, केन्द्रीय विद्यालय बिल व अन्य शिक्षा-विरोधी और छात्र-विरोधी नीतियों के खिलाफ प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन से पहले दिल्ली के विभिन्न कॉलेजों के छात्र आर्ट फेकल्टी, नॉर्थ कैम्पस, दिल्ली विश्वविद्यालय के गेट पर इकट्ठा हुए। बाद में प्रदर्शन सभा में तब्दील हो गया।

सभा का संचालन कॉ. कुनाल पाराशर ने किया। संगठन के राज्य सचिव कॉ. प्रशांत कुमार, गुलाबी बाग स्थानीय कमेटी से मौसम कुमारी, आर्ट फेकल्टी से श्रीराम, किरोड़ीमल कॉलेज से आशुतोष सिंह यादव, विवेकानंद कॉलेज से श्रेया, मोतीलाल नेहरू कालेज से अशरफ अली, जाकिर हुसैन कॉलेज से सौम्या सामल, इंस्ट्रीच्युट ऑफ होम इकोनोमिक्स से प्रियंका चौरसिया आदि ने सभा को सम्बोधित किया।

वक्ताओं ने बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग गाइडलाइन छात्रों के जनवादी अधिकारों पर एक हमला हैं। इसमें कैम्पस में पुलिस तैनात करना, सुरक्षा कर्मियों को शक्ति प्रदान करना और निगरानी के अन्य प्रावधान व छात्रों पर अलोकतांत्रिक प्रतिबंध थोपना प्रस्तावित है। जहां सरकार एक तरफ तो शिक्षा के व्यापारीकरण की नीतियां ला रही है, शिक्षा को एक वैश्विक बिकाऊ वस्तु बनाने की ओर अग्रसर है जो इस साल दिसम्बर में होने वाली विश्व व्यापार संगठन के नरोबी सम्मेलन में तय हो सकता है। वहीं दूसरी तरफ, सरकार द्वारा इन शिक्षा-विरोधी नीतियों के खिलाफ छात्रों और अध्यापकों के बढ़ते आन्दोलन को तोड़ने का पूरा प्रयास किया जा रहा है। इन नीतियों को आसानी से लागू करने के लिए सरकार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से ये गाइडलाइनें लाई है। वक्ताओं ने शिक्षा के व्यापारीकरण, शिक्षा-विरोधी नीतियों और छात्रों के जनवादी अधिकारों पर हमले के खिलाफ छात्र आन्दोलन गठित करने का आह्वान किया।

पास-फेल प्रणाली पुनः लागू कराने के लिए ऑल इण्डिया सेव एज्युकेशन कमेटी के बैनर तले दिल्ली में 23 नवम्बर, 2015 को संसद पर अखिल भारतीय प्रदर्शन सफल करें

"Print-line
Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."
Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com
फोन नं. : 011-25726631, 9868350503